तरुण छत्तीसगढ़

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026
वर्ष 36 अंक 326 | कोरबा, गुरुवार, दिनांक 28 अगस्त 2025 डाक 29 अगस्त 2025 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
बिहार में मतदाता अधिकार यात्रा के दौरान लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी

देश-विदेश
गूगल मैप ने ली जान! मैप ने कार सवारों को दिखाया गलत रास्ता, वैन नदी में बही, 3 लोगों की मौत

फीचर पेज
त्वचा पर कोजिक एसिड इस्तेमाल करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान, होगा फायदा

प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा से दोनों देशों के संबंधों को मिलेगी नई दिशा

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तक तियानजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के लिए चीन का दौरा करेंगे। इस दौरान उनकी चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ मुलाकात होगी, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम होगा। भारत और चीन ने 1 अप्रैल 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित किए थे। लेकिन 1962 के सीमा संघर्ष ने इन संबंधों को झटका दिया। 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा ने रिश्तों को फिर से पटरी पर लाने की शुरुआत की। इसके बाद 2003 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की यात्रा ने विशेष प्रतिनिधि प्रणाली का गठन किया और इसके बाद 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा ने रणनीतिक और सहयोगात्मक साझेदारी को बढ़ावा दिया।

2014 में राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भारत यात्रा ने घनिष्ठ विकासात्मक साझेदारी की नींव रखी, जबकि 2015 में प्रधानमंत्री मोदी की चीन यात्रा ने इस गति को बनाए रखा। दोनों देशों ने 2018 में वुहान और 2019 में चेन्नई में अनौपचारिक शिखर सम्मेलनों के जरिए आपसी विश्वास बढ़ाया। हालांकि, 2020 में पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर तनाव ने संबंधों को प्रभावित किया। 2024 में रूस के कजान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी और जिनपिंग की मुलाकात से रिश्ते और बेहतर हुए। इस यात्रा से पहले भी दोनों देशों के बीच उच्च-स्तरीय मुलाकातें होती रही हैं। 2016 में जी20 हांग्जो और ब्रिक्स गोवा, 2017 में ब्रिक्स ज़ियामेन, 2018 में एससीओ क़िंगदाओ और 2019 में एससीओ बिश्केक और जी20 ओसाका जैसे आयोजनों में दोनों देशों के नेता मिले। 2022 में जी20 बाली में भी संक्षिप्त बातचीत हुई।

सीमा विवाद के समाधान के लिए 2003 से विशेष प्रतिनिधि प्रणाली के तहत 24 दौर की वार्ताएं हो चुकी हैं। हाल ही में चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने भारत का दौरा कर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश मंत्री से मुलाकात की। परामर्श और समन्वय तंत्र (डब्ल्यूएमसीसी) की 27 बैठकें और वरिष्ठ सैन्य कमांडरों की 19 बैठकें हो चुकी हैं, जिनका फोकस 2020 से लद्दाख में सैनिकों की वापसी पर है। जल संसाधन सहयोग के लिए 2006 से विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र (ईएलएम) काम कर रहा है, जिसकी 14 बैठकें हो चुकी हैं। उम्मीद है कि यह यात्रा दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली और सहयोग बढ़ाने का एक और अवसर होगी।

नेपाल के रास्ते बिहार में घुसे जैश-ए-मोहम्मद के 3 आतंकी

पुलिस ने जारी किया हाई अलर्ट

हसनैन अली (रावलपिंडी पाकिस्तान) | आदिल हुसैन (उमरकोट पाकिस्तान) | मोहम्मद उस्मान (बहावलपुर पाकिस्तान)

पूर्णिया, 28 अगस्त।

बिहार पुलिस मुख्यालय ने बड़ा अलर्ट जारी किया है। जानकारी के मुताबिक पाकिस्तान के आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के तीन आतंकी नेपाल के रास्ते बिहार में घुसे हैं। इनमें हसनैन अली (रावलपिंडी निवासी), आदिल हुसैन (उमरकोट निवासी) और मोहम्मद उस्मान (बहावलपुर निवासी) शामिल हैं। नेपाल की सीमा के रास्ते जैश के तीन आतंकियों के बिहार की सीमा मैं दाखिल होने को लेकर राज्य पुलिस मुख्यालय ने सीमावर्ती जिलों को किया अलर्ट। सीमावर्ती जिलों के एसपी को किया गया सतर्क। खंगाले जा रहे नेपाल सीमा से सटे क्षेत्रों में सीसीटीवी कैमरे। पूर्णिया डीआईजी प्रमोद कुमार मंडल ने बताया की राज्य पुलिस मुख्यालय के निर्देश के आलोक में सीमावर्ती जिलों को विशेष चौकसी बरतने को कहा गया है। नेपाल की सीमा के रास्ते प्रवेश करने वाले जैश के तीनों आतंकी पाकिस्तानी है। इन आतंकियों में रावलपिंडी का हसनैन अली उमरकोट का आदिल हुसैन और बहावलपुर का मो उस्मान शामिल हैं। पुलिस ने तीनों आतंकियों के नाम और तस्वीरें सार्वजनिक कर दी हैं. इनके पासपोर्ट से जुड़ी जानकारी भी साझा की गई है।

बताया जा रहा है कि ये आतंकी अगस्त के दूसरे हफ्ते में काठमांडू पहुंचे और तीसरे हफ्ते में नेपाल बॉर्डर से बिहार में दाखिल हुए। आशंका है कि ये किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की फिराक में थे। सुरक्षा एजेंसियों में हड़कंप मच गया है। पुलिस मुख्यालय ने सभी जिलों को सतर्क कर दिया है। सीमावर्ती जिले सीतामढ़ी, मधुबनी, पश्चिम चंपारण, अररिया, किशनगंज और सुपौल में चौकसी बढ़ा दी गई है। भागलपुर और अन्य जिलों में भी अलर्ट जारी है।

अब जाग जाओ..., डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ पर पूर्व आरबीआई गवर्नर की सरकार को चेतावनी, दिया ये सुझाव

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय एक्सपोर्ट पर 50 फीसद टैरिफ लगा दिया है। इसके चलते कपड़ा, हीरा और झींगा कारोबार काफी प्रभावित होगा। अब भारत पर लगे इस टैरिफ को लेकर भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर और मशहूर अर्थशास्त्री रघुराम राजन ने बेहद चिंताजनक बताया है। रघुराम राजन ने कहा कि भारत के लिए किसी एक व्यापारिक साझेदार पर अधिक निर्भर रहना ही आपदा के समान है और ये एक बड़ी चेतावनी है। राजन ने चेतावनी दी कि आज की वैश्विक व्यवस्था में व्यापार, निवेश और वित्त को तेजी से हथियार बनाया जा रहा है और भारत को सावधानी से कदम उठाने चाहिए। रघुराम राजन ने कहा कि व्यापार अब हथियार बन गया है। उन्होंने आगे कहा, यह एक चेतावनी है।

हमें किसी एक देश पर बहुत अधिक निर्भर नहीं होना चाहिए। हमें पूर्व की ओर, यूरोप की ओर, अफ्रीका की ओर देखना चाहिए और अमेरिका के साथ आगे बढ़ना चाहिए, लेकिन ऐसे सुधारों को लागू करना चाहिए जो हमें अपने युवाओं को रोजगार देने के लिए आवश्यक 8-8.5 प्रतिशत की विकास दर हासिल करने में मदद करें। कल लागू हुए वाशिंगटन द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है। इसमें भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद से जुड़ा 25 प्रतिशत अतिरिक्त जुर्माना भी शामिल है। हालांकि भारत को रूसी कच्चा तेल खरीदने के लिए ट्रंप सरकार द्वारा कठोर कर का सामना करना पड़ा है, तो वहीं रूसी तेल का सबसे बड़ा आयातक - चीन और यूरोप पर कोई बड़ा टैरिफ नहीं लगाया गया।

दिल्ली के 20 कॉलेजों को बम से उड़ाने की धमकी, ई-मेल से मचा हड़कंप

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में चाणक्यपुरी स्थित जीसस एंड मैरी कॉलेज समेत करीब 20 कॉलेजों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इन सभी कॉलेजों को ई-मेल द्वारा धमकी दी गई है। वहीं, धमकी मिलने से सभी कॉलेज प्रशासन में हड़कंप मचा हुआ है। इस मामले में सभी कॉलेजों की तरफ से पुलिस को सूचना दी गई है।

वहीं, पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, कॉलेजों को धमकी मिलने के मामले में जांच की गई लेकिन, जांच में पता चला कि धमकी बात फर्जी है। बताया गया कि ई-मेल भेजने वाले ने वीपीएन का इस्तेमाल किया था। वहीं, इससे पहले दिल्ली के कई स्कूलों को भी बम से उड़ाने की धमकी मिल चुकी है। लेकिन सवाल है कि दिल्ली पुलिस धमकी देने वालों को पकड़ क्यों नहीं पाती है।

खाई में पलटी स्कूल बस, 12 से ज्यादा बच्चे घायल, चालक पर लापरवाही का आरोप

हल्द्वानी। उत्तराखंड के हल्द्वानी के लालकुआं कोतवाली क्षेत्र के बरेली रोड पर जयपुर बीसा गांव में गुरुवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हो गया। निजी स्कूल की एक बस, जिसमें बच्चे सवार थे, दूसरी बस को साइड देने के चक्कर में अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में पलट गई। हादसे के बाद घटनास्थल पर चीख पुकार मच गई। इसके बाद स्थानीय लोगों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए बस का शीशा तोड़कर सभी बच्चों को बाहर निकाला, जिसमें 12 से ज्यादा बच्चे घायल हो गए। घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। बस चालक और परिचालक को भी गंभीर चोटें आई हैं।

एलओसी के पास घुसपैठ की कोशिश नाकाम

सेना की कार्रवाई में दो आतंकी ढेर

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले के गुरेज सेक्टर में गुरुवार सुबह भारतीय सेना ने दो आतंकियों को मार गिराया है। दोनों आतंकवादी भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे थे।सेना के चिनार कॉर्प्स ने एक्स पर पोस्ट किया, जम्मू-कश्मीर पुलिस से मिली खुफिया जानकारी के आधार पर सेना और जम्मू पुलिस ने अभियान चलाकर दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया। सेना ने कहा कि सतर्क सैनिकों ने संदिग्ध गितिविधि देखी और घुसपैठियों को चुनौती दी, जिसके बाद आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद सेना ने जवाबी कार्रवाई में गोलीबारी की और दो आतंकवादियों को मार गिराया। हालांकि ऑपरेशन अभी भी चल रहा है। इससे पहले इसी महीने की शुरुआत में अखल क्षेत्र में दो आतंकवादी को मारे गए थे।

30 जुलाई को भी सेना ने आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के हथियारों से लैस 2 आतंकवादियों को मार गिराया था। 30 जुलाई को भारतीय सेना ने पुंछ इलाके में ऑपरेशन शिव शक्ति की शुरुआत भी की थी। यह ऑपरेशन क्षेत्र में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ मिलकर सैन्य और नागरिक खुफिया इकाइयों द्वारा तालमेल और समन्वय से प्राप्त विश्वसनीय खुफिया सूचनाओं पर आधारित था।

बिहार की जनता होशियार, कटे वोट फिर जोड़े भी जाएंगे: राहुल गांधी

सीतामढ़ी। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी गुरुवार को वोटर अधिकार यात्रा के क्रम में सीतामढ़ी पहुंचे। यहां उन्होंने एक जनसभा को संबोधित करते हुए बिहार में एसआरआई के जरिए काटे गए नामों को लेकर चुनाव आयोग को घेरा। उन्होंने कहा कि ये अभी वोट काटे गए हैं लेकिन नए नाम जोड़े भी जाएंगे। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अगर वोट का अधिकार समाप्त हो गया या वोट कट जाएगा तो गरीबों के पास कुछ नहीं बचेगा। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि अभी वोट काटा जा रहा है, उसके बाद राशन कार्ड समाप्त किया जाएगा और उसके बाद जमीन छीन ली जाएगी। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र, हरियाणा और कर्नाटक में वोट चोरी कर सत्ता में पहुंचे हैं। महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव में हमारे गठबंधन को अधिक सीटें आईं, लेकिन चार महीने बाद हुए विधानसभा चुनाव में हमारा गठबंधन दिखा तक नहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि यहां लाखों नाम जोड़कर वोट चोरी की गई। कांग्रेस नेता ने बिहार में इस यात्रा की शुरुआत करने के उद्देश्य को लेकर कहा कि चुनाव आयोग को यह पता चल जाए कि बिहार की जनता होशियार है। उन्होंने संविधान की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के पहले दलित को अछूत कहा जाता था। आजादी के बाद संविधान के जरिए उन्हें अधिकार दिए गए हैं। उन्होंने दावा किया कि बिहार की मतदाता सूची से जो 65 लाख नाम काटे गए हैं, उनमें दलित, अति पिछड़ा, अल्पसंख्यक, गरीब, और किसान शामिल हैं, इसमें एक अमीर का नाम नहीं है। ये गरीबों का अधिकार छीनना चाहते हैं। बता दें कि वोटर अधिकार यात्रा के 12वें दिन की शुरुआत सीतामढ़ी से हुई।

10 करोड़ से अधिक की जीएसटी चोरी का खुलासा

भीलवाड़ा 28 अगस्त। महानिदेशालय जीएसटी इंटेलिजेंस जयपुर जोनल यूनिट ने गुरुवार को भीलवाड़ा में जीएसटी चोरी और फर्जी बिलिंग के नेटवर्क का पर्दाफाश करने के लिए बड़े पैमाने पर छापेमारी की। जयपुर से आई विशेष टीमों ने शहर के 10 से अधिक प्रोसेस हाउस और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर एक साथ कार्रवाई की। इस दौरान कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और डिजिटल रिकॉर्ड्स बरामद किए गए, जिनकी जांच शुरू हो गई है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, यह कार्रवाई मुख्य रूप से निखिल डाड के ठिकानों पर केंद्रित थी, जो पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डाड के पुत्र हैं। इसके अलावा, माहेश्वरी केमिकल से जुड़े अनुज सोमानी के प्रतिष्ठानों पर भी डीजीजीआई ने तलाशी ली। प्रारंभिक जांच में 10 करोड़ रुपये से अधिक की जीएसटी चोरी का खुलासा हुआ है। अधिकारियों का कहना है कि यह राशि और बढ़ सकती है, क्योंकि बरामद दस्तावेजों और डिजिटल रिकॉर्ड्स का विश्लेषण अभी जारी है। डीजीजीआई की यह कार्रवाई राजस्थान में जीएसटी चोरी के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाइयों में से एक मानी जा रही है। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, यह छापेमारी जीएसटी नियमों के उल्लंघन और फर्जी बिलिंग के जरिए बड़े पैमाने पर कर चोरी के नेटवर्क को उजागर करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि बरामद दस्तावेजों और रिकॉर्ड्स की गहन जांच के बाद कर चोरी की पूरी तस्वीर सामने आएगी।

इस कार्रवाई से भीलवाड़ा के व्यावसायिक समुदाय में हड़कंप मच गया है। डीजीजीआई ने स्पष्ट किया कि जीएसटी चोरी के खिलाफ ऐसी कार्रवाइयां भविष्य में भी जारी रहेंगी, ताकि कर चोरी पर अंकुश लगाया जा सके। वहीं, अधिकारियों का कहना है कि यह कार्रवाई न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि पूरे राज्य में जीएसटी अनुपालन को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत संदेश देती है। जांच पूरी होने तक और जानकारी की प्रतीक्षा है।

श्रीनगर में बाढ़ जैसी स्थिति... बिजली-पानी, आवागमन और इंटरनेट पर आफत

आज और कल भारी बारिश के आसार

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

जम्मू-कश्मीर में मौसम का कहर जारी रहा है। श्री माता वैष्णो देवी के यात्रा मार्ग पर अर्द्धकुंवारी में स्थित इंद्रप्रस्थ भोजनालय के पास हुए भूस्खलन से मरने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 34 पहुंच गई। इनमें 11 उत्तर प्रदेश के हैं। मंगलवार देर रात तक नौ श्रद्धालुओं की मौत और 21 के घायल होने की पुष्टि हुई थी। बाद में बचाव दल को मलबे के नीचे से कई और शव मिले। तलाशी अभियान अभी भी जारी है। आशंका है कि मलबे में अभी भी कई लोग फंसे हो सकते हैं। हादसा मंगलवार दोपहर करीब तीन बजे पहाड़ का हिस्सा ढहने से हुआ। इससे चट्टानें और मलबा नीचे गिरा और लोग दब गए। जम्मू में चौबीस घंटे में 380 मिमी बारिश दर्ज हुई जोकि पिछले 115 वर्षों में सबसे ज्यादा बारिश है। जम्मू संभाग में नदियों का जलस्तर घटा तो कश्मीर संभाग में बढ़ गया। भारी बारिश के कारण बिजली-पानी, आवागमन और इंटरनेट सब पर आफत रही।

जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश ने कहर मचाया हुआ है, बारिश के कारण बाढ़ और भूस्खलन की घटना हुई हैं। जम्मू में कटरा से लेकर डोडा तक भारी नुकसान हुआ है। कई पुल टूटे हैं, बिजली की लाइन और मोबाइल टावर भी क्षतिग्रस्त हुए हैं। लगातार भारी बारिश की वजह से बाढ़ और जलजमाव के चलते अब तक तीन हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा गया है। हेलीकॉप्टर से रेस्क्यू अभियान चलाया जा रहा है। सुरक्षा के मद्देनजर वैष्णो देवी यात्रा बुधवार को दूसरे दिन भी बंद रखी गई। आज भी यात्रा को बहाल नहीं किया गया है। जम्मू संभाग में बुधवार को नदी नालों में जल स्तर घटने से राहत रही, लेकिन कश्मीर में कई इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति रही। कई कस्बे और गांव डूब गए हैं। श्रीनगर और अनंतनाग में झेलम उफान पर रही। कई इलाकों से लोगों को सुरक्षित निकाला गया। चक्की पुल पठानकोट में जमीन धंसने के कारण जम्मू से आने और जाने वाली 58 ट्रेनों को रद्द किया गया और 46 ट्रेनों निर्धारित गंतव्य से पहले ही रोक दिया गया। 18 ट्रेनों को मूल के बजाय अन्य स्टेशनों से चलाया गया।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक
चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार
डॉ.आर.के.अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
Mob.9424170010
-: परामर्श का समय :-
सुबह 10.30 से 1.30 (शाम को बंद)
डॉ.शशि अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.(U.K)
Mob.9826389894
सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।
मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)
विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...
पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

भारी बारिश और लैंडस्लाइड से जम्मू-हिमाचल को तगड़ा नुकसान, हाईवे बंद होने से फलों-सब्जियों के हजारों ट्रक फंसे

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

इस बार का मानसून कहर बनकर बरस रहा है। पहाड़ों से लेकर मैदानी इलाकों तक बारिश ने जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। यातायात ठप पड़े हैं। मौसम विभाग का भी कहना है कि उत्तर भारत और पहाड़ों में अभी बारिश का दौर जारी रहेगा। दिल्ली-एनसीआर, यूपी, बिहार, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में तबाही मचाने के बाद भी बारिश थमने का नाम नहीं ले रही है। पहाड़ी इलाकों में लगातार कई दिनों से बारिश हो रही है। इसके कारण जम्मू जैसे इलाके में भूस्खलन और रास्ते बंद होने को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। हालांकि, बारिश के कारण थोड़ा तापमान भी कम होने की संभावना है। भूस्खलन की सबसे ज्यादा मार कुल्लू झेल रहा है। यहां चंडीगढ़-कुल्लू हाईवे पर लैंडस्लाइड होने से हजारों ट्रक फंस गए हैं, जिसके चलते सेब, टमाटर और अन्य सब्जियां पूरी खराब होती जा रही है। यहां छोटी गाड़ियों के लिए रास्ता तो खोला गया है, लेकिन हजारों ट्रक अभी भी फंसे हुए हैं। हिमाचल प्रदेश में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश के कारण 534 सड़कों को बंद करना पड़ा है। जबकि 1,184 बिजली वितरण ट्रांसफार्मर बाधित हुए हैं।

एसडीएमए ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में भूस्खलन, अचानक आई बाढ़ और मकान ढहने से राज्य भर में मरने वालों की संख्या बढ़कर 310 हो गई है। कुल्लू में सबसे ज्यादा सड़कें क्षतिग्रस्त हुईं, जहां एक राष्ट्रीय राजमार्ग सहित 166 सड़कें बंद हैं। इसके बाद मंडी में 216 सड़कें बंद हुईं। कुल्लू (600 ट्रांसफार्मर बाधित) और मंडी (320 ट्रांसफार्मर) में बिजली कटौती सबसे ज़्यादा रही, जबकि कांगड़ा में पानी की आपूर्ति पर सबसे बुरा असर पड़ा।इस आपदा ने बुनियादी ढांचे और आजीविका को भी भारी नुकसान पहुंचाया है। जम्मू में जहां लैंडस्लाइड से भारी नुकसान की बात कही जा रही है, वहीं हिमाचल में अनुमानित सार्वजनिक संपत्ति को कुल अनुमानित नुकसान 2.45 लाख करोड़ रुपये से अधिक है।

विधायक पुत्र के बंगले में नौकरानी की लाश मिली

टीकमगढ 28 अगस्त। टीकमगढ़ जिले की खरगापुर कांग्रेस विधायक के बेटे छतरपुर स्थित बंगले में एक 20 साल की युवती की मौत हो गई। शव बंगले के पीछे वाले हिस्से में आम के पेड़ से लटका मिला। मृतक युवती के चेहरे पर चोट के निशान थे। सिविल लाइन थाना पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है। यह घटना सोमवार सुबह करीब 8 बजे की बताई जा रही है, लेकिन इसकी भनक किसी को नहीं लगी। आनन-फानन में मृतका का पोस्टमॉर्टम करवाने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। विधायक चंदा सिंह गौर के बेटे अभियंत सिंह गौर से सवाल किए गए तो उन्होंने कहा, घटना के समय मैं जिला मुख्यालय से बाहर दिल्ली में था। घर पर मेरी पत्नी और 17 साल का बेटा थे, जिन्होंने फोन पर मुझे सूचना दी। मैं अगले दिन पहुंचा। मुझे नहीं पता कि सपना रैकवार ने यह घातक कदम क्यों उठाया। वह फोन नहीं चलाती थी और न ही कभी परेशान दिखती थी। वह मेरी नौकरानी नहीं, बल्कि बेटी की तरह थी. वह 5 साल की उम्र से हमारे साथ रह रही थी। हम उसकी शादी के लिए रिश्ता भी ढूंढ रहे थे।

ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराने के दौरान हुआ ठगी का शिकार

कोरबा । कोरबा-पश्चिम गेवरा क्षेत्र में पदस्थ एक एसईसीएल कर्मी ने पत्नी के इलाज के लिए बिलासपुर के एक चिकित्सालय में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराने गूगल पर नंबर सर्च किया। थोड़ी देर बाद कॉल आया और डिटेल भरने के बहाने लिंक भेजकर खाता से 90 हजार रुपए पार कर दिया गया।

उक्त घटना प्रगति नगर कॉलोनी निवासी गेवरा क्षेत्र में पदस्थ एक एसईसीएल कर्मी के साथ घटित हुई। जो अपनी पत्नी का इलाज कराने बिलासपुर के एक चिकित्सालय में जाने वाले थे। जिसके लिए उन्होंने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराकर अस्पताल में लगने वाली लंबी कतार से राहत पाने के लिए गूगल पर वहां के चिकित्सक का नंबर सर्च किया। थोड़ी देर में उनके मोबाइल पर कॉल आ गया। दूसरी ओर से युवती ने खुद को उस अस्पताल की रिसेप्शनिस्ट बताते हुए बात की। उसने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए नाम-पता सहित अन्य जानकारी भरने की बात कहते हुए एक लिंक भेज दिया। एसईसीएल कर्मी ने चिकित्सालय से कॉल आने की सोचकर उसमें बताया गया पूरा ब्यौरा व सबमिट करने पर आया ओटीपी नंबर भी भर दिया। 2 दिन बाद उसके बैंक खाता से 90 हजार रुपए पार हो गया। ऑनलाइन ठगी होने का पता चलने पर उक्त व्यक्ति ने स्थानीय पुलिस व साइबर सेल से संपर्क करके शिकायत दर्ज की। पुलिस ने जांच-पड़ताल की तो उक्त रकम का ट्रांसफर कोलकाता स्थित एचडीएफसी बैंक के खाते में करने का पता चला। जानकारी जुटाने पर उक्त खाता कोलकाता निवासी किसी जुबेर शेख के नाम से होना पाया गया। खाता धारक के पते पर पुलिस टीम पहुंची तो वहां उक्त नाम का कोई व्यक्ति नहीं मिला। मामले में पुलिस केस दर्ज कर जांच कर रही है।

ऑनलाइन ठगी से बचने रहें जागरूक

दीपका थाना प्रभारी प्रेमचंद साहू के मुताबिक नए-नए तरीके से ऑनलाइन ठगी की घटना हो रही है। पुलिस साइबर व ऑनलाइन ठगी से लोगों को बचाने के लिए जन जागरण अभियान चला रही है। ऐसे ठगी की घटना से बचने के लिए लोगों को जागरूक होना जरूरी है। सोशल मीडिया से जरूरी नंबर तलाशते समय ऑफिशियल वेबसाइट का इस्तेमाल करें। अनजान लिंक पर कभी भी अपनी निजी जानकारी व बैंक डिटेल दर्ज न करें। संदिग्ध कॉल-मैसेज आने या अकाउंट से रकम पार होने पर साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज करें।

रमेश चंद्र महापात्रा ने संभाला एसईसीएल निर्देशक तकनीकी का पदभार

कोरबा। रमेश चंद्र महापात्रा ने एसईसीएल निदेशक (तकनीकी) का पदभार ग्रहण कर लिया है। इस अवसर पर सीएमडी एसईसीएल हरीश दुहन ने एसईसीएल परिवार में उनका हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें बधाई व शुभकामनाएँ दीं, इस अवसर पर श्रीमती शुभश्री महापात्रा की विशेष उपस्थिति रही एसईसीएल निदेशक (तकनीकी) संचालन, एन प्रेरंकलिन जयकुमार एवं निदेशक (मानव संसाधन) विरंची दास ने भी श्री महापात्रा से भेंट कर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। एसईसीएल में निदेशक (तकनीकी) का पदभार संभालने से पूर्व रमेश चंद्र महापात्रा, ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) के झांझरा क्षेत्र में क्षेत्रीय महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत थे।खनन क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक समय का अनुभव रखने वाले, श्री महापात्रा परिचालन में रणनीतिक दृष्टिकोण और नवाचारी नेतृत्व के लिए जाने जाते हैं।उन्होने आईआईटी-बीएचयू से 1990 में माइनिंग इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की हैं। श्री महापात्रा ने मानव संसाधन प्रबंधन में एमबीए किया है और वे इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के फेलो भी हैं।उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एसईसीएल के कोरबा क्षेत्र स्थित सूराकछार कोलियरी से की और उन्हें कोलियरी मैनेजर, प्रोजेक्ट ऑफिसर से लेकर अतिरिक्त महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय महाप्रबंधक जैसे पदों पर कार्य करने का व्यापक अनुभव है।अपने लंबे कार्यकाल के दौरान उन्होंने सीआईएल की कुछ सबसे बड़ी भूमिगत एवं ओपनकास्ट खनन परियोजनाओं का सफल नेतृत्व किया है। उत्पादन वृद्धि, आधुनिक प्रौद्योगिकियों के समावेश, भूमि एवं पुनर्वास संबंधी जटिल मुद्दों के समाधान तथा समुदायों के साथ मजबूत जुड़ाव स्थापित करने में उनकी भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय कोयला क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया है, जिसमें अफ्रीकन माइनिंग इंडाबा (केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका) और चेक गणराज्य में औद्योगिक सहयोग वार्ताएँ शामिल हैं।

बुंदेली में श्याम अखाड़ा की तैयारी जोरों पर

कोरबा। ग्राम बुंदेली में 30 अगस्त को आयोजित होने जा रहे 11वें श्री श्याम अखाड़ा की तैयारियां जोरों पर हैं। इस बार श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए आयोजन समिति ने 25 हजार स्क्वायर फीट क्षेत्र में एक भव्य डोम का निर्माण कराया है। इसमें लगभग 5 हजार श्रद्धालु एक साथ बैठकर भजन संध्या का आनंद ले सकेंगे।आयोजन समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि बाबा श्री श्याम के अलौकिक दरबार को विशेष रूप से सजाया जाएगा।

मंच की भव्यता और श्रद्धा का वातावरण भक्तों के लिए अविस्मरणीय अनुभव बनेगा। भक्तों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए पार्किंग, बैठने, पेयजल और सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की गई है।भजन संध्या के दौरान बाबा श्याम के भजनों की धुन में सभी भक्त झूम उठेंगे। इस अवसर पर फूलों की होली भी खेली जाएगी, जो कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहेगा।समिति ने श्री श्याम रसोई की भी व्यवस्था की है, जहां सभी श्रद्धालु बिना किसी भेदभाव के प्रसाद ग्रहण कर सकेंगे। आयोजन समिति का कहना है कि यह अखाड़ा न सिर्फ आध्यात्मिक संगम होगा, बल्कि सामाजिक समरसता और भाईचारे का संदेश भी देगा।

स्थानीय ग्रामीणों से लेकर दूर-दराज से आने वाले भक्तों तक सभी इस भव्य आयोजन के गवाह बनेंगे। श्रद्धालुओं में 11वें श्री श्याम अखाड़ा को लेकर खासा उत्साह देखा जा रहा है।30 अगस्त को ग्राम बुंदेली में होने वाले इस आयोजन में हजारों की संख्या में बाबा श्याम के भक्तों के शामिल होने की संभावना है।

युवा टीम ने कैबिनेट मंत्री लखनलाल देवांगन का किया भव्य स्वागत

क्षेत्र के विकास में सहयोग का किया वादा

कोरबा । कोरबा विधायक और छत्तीसगढ़ के वाणिज्य, उद्योग, और श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन को आबकारी जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय मिलने पर उनके क्षेत्र में खुशी का माहौल है। श्री देवांगन का विभिन्न समाजों की ओर से और व्यक्तिगत तौर पर स्वागत सम्मान किया जा रहा है।

इसी कड़ी में पूर्वांचल विकास समिति कुसमुंडा के अध्यक्ष संजय पांडेय (सोनू) द्वारा कैबिनेट मंत्री लखनलाल देवांगन का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बबलू पांडेय, विनोद पांडेय, अजय सिंह, रिंकू दुबे, मोनू पांडेय, शुभम पांडेय, भरत यादव, गुड्डू पांडेय, मनीष तिवारी, रिंकी सिंह सहित बड़ी संख्या मे पहुचे युवा और पूर्वांचल विकास समिति कुसमुंडा के पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहे

कनौजिया राठौर समाज के लोगों ने किया भाजपा जिला अध्यक्ष गोपाल मोदी से मुलाकात

कोरबा। कनौजिया राठौर समाज के द्वारा भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष गोपाल मोदी से भेंट मुलाकात किया गया यह मुलाकात का कार्यक्रम ट्रांसपोर्ट नगर स्थित भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में रखा गया द्य जहां कनौजिया राठौर समाज के पदाधिकारी एवं सदस्य गणों द्वारा मुलाकात के दौरान जिला भाजपा अध्यक्ष गोपाल मोदी का पुष्प -गुछ के साथ स्वागत किया गया स्वागत पश्चात राठौर समाज के पदाधिकारीयों द्वारा समाज की आवश्यकताओं के बारे में श्री मोदी को अवगत करायाद्य

वही कार्यक्रम मे उपस्थित श्री मोदी ने कनौजिया राठौर समाज की आवश्यकताओं को जाना और उसे पूर्ण करने के लिए हर संभव मदद का आश्वासन देते हुए कहा कि हम विकसित भारत के मिशन पर है जिसे 2047 तक पूरा करने का संकल्प हमारे देश के प्रधानमंत्री द्वारा लिया गया है और हम सब भी इस संकल्प में कैसे अपनी भागीदारी सिद्ध करें यह हमें सोचने का समय है क्योंकि यह हमारी राजनीतिक, सामाजिक के अलावा व्यक्तिगत जवाबदारी भी है ताकि हम हमारे आने वाली पीढ़ी को एक नए आत्मनिर्भर विकसित भारत दे सके द्य और विकसित भारत के इस संकल्प को पूरा होते हुए हम सब इसके साथी बने इइस कार्यक्रम में कनौजिया राठौर समाज के अध्यक्ष सीताराम राठौर, सचिव हरीश राठौर, कोषाध्यक्ष छवि राठौर, विजय राठौर गोविंद राठौर के साथ काफी संख्या में राठौर समाज के लोग इस मुलाकात कार्यक्रम में शामिल रहे

बदहाल सड़क से त्रस्त आम जन ने किया चक्काजाम

कोरबा । कोरबा जिले के बालकोनगर क्षेत्र का मुख्य मार्ग बारिश में बदहाल होने से स्थानीय लोग त्रस्त हैं। सड़क की मरम्मत नहीं होने से परसाभाटा व बेलगरी वार्ड में रहने वाले लोग आक्रोशित हो गए।

साकेत भवन में विराजे विघ्नहर्ता

कोरबा । गणेश चतुर्थी के अवसर पर निगम कार्यालय साकेत भवन में विंध्यहर्ता श्री गणेश की विशेष पूजा अर्चना की गई ,महापौर श्रीमती संजू देवी राजपूत , सभापति नूतन सिंह ठाकुर, वरिष्ठ पार्षद नरेंद्र देवांगन व लक्ष्मण श्रीवास ने प्रथम पूज्य श्री गणेश की पूजा अर्चना की गई ,महापौर श्रीमती संजू देवी राजपूत, सभापति नूतन सिंह ठाकुर, वरिष्ठ पार्षद नरेंद्र देवांगन, पार्षद लक्ष्मण श्रीवास ने विघ्नहर्ता श्री गणेश की पूजा अर्चना की, उन्होंने प्रथम पूज्य श्री गणेश से नगर के विकास व आम नागरिकों की सुख समृद्धि का आशीर्वाद मांगा। इस मौके पर नगर निगम कोरबा के अधिकारी कर्मचारियों ने पूरे भक्ति भाव के साथ भगवान गणेश का पूजन किया एवं निरंतर कृपा निगम परिवार पर बनी रहने की कामना की । गणेश चतुर्थी के इस पूरे गणेश उत्सव के दौरान साकेत भवन में प्रतिदिन सुबह शाम अधिकारी कर्मचारियों द्वारा विशेष पूजा अर्चना की जाएगी । इस अवसर पर निगम के कार्यपालन अभियंता अखिलेश शुक्ला , संपदा अधिकारी अनिरुद्ध सिंह, निगम सचिव रामेश्वर कंवर, अरुण मिश्रा, जेडी महंत, भावेश यादव, रामकृष्ण सोनी, शांतिलाल सोनी, मनोज श्रीवास आदि सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

तीजा पर व्रती महिलाओं ने हनुमान दुर्गा मंदिर एचटीपीपी में विधि-विधान से की पूजा-किया भजन कीर्तन

कोरबा । कोरबा जिले में आस्था और छत्तीसगढ़ की समृद्ध संस्कृति का पर्व तीजा (हरितालिका तीज) हर्षोल्लास से मनाया गया। इसी कड़ी में एचटीपीपी कॉलोनी स्थित श्री हनुमान दुर्गा मंदिर में सुहागिनों के लिए विशेष पूजा एवं आराधना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंदिर के पुरोहित पंडित भास्कर जोशी के मार्गदर्शन में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान पूर्ण किया गया। बड़ी संख्या में सम्मिलित होने पहुंची श्रद्धालु महिलाओं ने विधि-विधान से पूजन के बाद भक्ति भाव से अर्ध रात्रि तक शिव-पार्वती का अमर संवाद और अमृत कथा का श्रवण किया। पति एवं परिवार के लिए सुख-समृद्धि एवं स्वास्थ्य की प्रार्थना कर भजन कीर्तन करते हुए जागरण किया। पति की दीर्घायु की कामना कर सुहागिनें 36 घंटे से अधिक का कठिन निर्जला व्रत रखती हैं।

तीजा व्रत पूर्ण होने के बाद महिलाएं एक-दूसरे के घर भोज कर इस उत्सव को धूमधाम से मनाती हैं। तीजा पर घर-घर अलग-अलग प्रकार के छत्तीसगढ़ी व्यंजन बनाये जाते हैं। इनमें ठेठरी, खुरमी, नमकीन, मीठा मुठिया के नाम शामिल है। इसके अलावा अन्य स्वादिष्ट पकवान भी बनाये जाते हैं।

श्री हनुमान दुर्गा मंदिर के पुरोहित पंडित भास्कर जोशी ने बताया कि भाद्रपद मास की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। इस व्रत में विशेष रूप से महिलाएं व्रत रखकर भगवान शिव की पूजा कर पति की लंबी आयु की कामना करती हैं। तीजा के दिन घर की बहनों-बेटियों को श्रृंगार सामान उपहार स्वरूप दिया जाता है।

इंडस स्कूल के प्रचार्य गुप्ता को मिलेगा दिल्ली में सम्मान

कोरबा। इंडस पब्लिक स्कूल दीपका के प्राचार्य डॉ. संजय गुप्ता को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान और कुशल संस्था संचालन के लिए नेशनल प्रिंसिपल अवार्ड 2025 से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन्हें 7 सितंबर 2025 को होटल रेडिशन ब्लू नई दिल्ली, द्वारिका में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा।डॉ. संजय गुप्ता ने अपने 46 वर्षों के कार्यकाल में शिक्षा जगत को अपनी सेवा दी है और अपना सर्वस्व विद्यार्थियों के लिए समर्पित किया है। उनके प्रयासों से इंडस पब्लिक स्कूल दीपका ने सीबीएसई बोर्ड में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और विभिन्न राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।डॉ. संजय गुप्ता ने कहा कि वह सी ई डी फाउंडेशन ग्रुप और उसकी टीम को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने उन्हें इस योग्य समझा। उनका उद्देश्य है कि वह अंतिम सांस तक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते रहेंगे और विद्यार्थियों को सतत रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे।

नेशनल प्रिंसिपल अवार्ड असाधारण सामाजिक कार्य, शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान, भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में योगदान सहित विभिन्न मापदंडों पर खरा उतरने पर दिया जाता है। इस वर्ष देश भर के 150 शिक्षाविदों को यह सम्मान प्रदान किया जा रहा है, जिसमें डॉ. संजय गुप्ता का नाम भी शामिल है।इंडस पब्लिक स्कूल दीपका ने अपने स्थापना के बाद से ही शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। स्कूल के विद्यार्थी सीबीएसई बोर्ड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं और विभिन्न राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। स्कूल के प्राचार्य डॉ. संजय गुप्ता के नेतृत्व में स्कूल ने नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है।

एसईसीएल मुख्यालय में मेडिकल का हुआ सफल आयोजन

कोरबा। एसईसीएल बिलासपुर म मुख्यालय के मेडिकल विभाग द्वारा हाल ही में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य चिकित्सकों और फार्मासिस्ट्स का क्लीनिकल और स्किल अपग्रेडेशन करना तथा मेडिकल बिल स्क्रूटनी प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ और पारदर्शी बनाना था।कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान धन्वंतरि के चित्र पर दीप प्रज्वलन से किया गया, जिसे डॉ. प्रतिभा पाठक,ने किया और इसके पश्चात डॉ. ब्रुतिदेव मिश्रा द्वारा माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम का संचालन सौरभ पांडेय, महाप्रबंधक के नेतृत्व में हुआ। इस प्रशिक्षण में कुल 52 डॉक्टर एवं फार्मासिस्ट्स ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए, जिनमें पर डॉ. डी. एन. दासपर सत्या वेंकट रेड्डी) पर डॉ. अरिहंत जैन पर पवन बागीयालपर डॉ. अलका और डॉ. उषा रानी औरपर डॉ. नीतू शामिल थे।समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। यह प्रशिक्षण न केवल चिकित्सकीय सेवाओं की गुणवत्ता में वृद्धि करेगा, बल्कि मेडिकल बिल स्क्रूटनी की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने में भी सहायक सिद्ध होगा।

बिजली चोरी के आरोपी को सुनाई गई सजा

कोरबा। विशेष न्यायाधीश (विद्युत अधि.) कोरबा एस. शर्मा द्वारा विद्युत अधिनियम 2003 के तहत विद्युत चोरी के मामले में आरोपी अब्दुल रसीद, उम्र 55 वर्ष, पिता अब्दुल हामिद, पता क्रा.नं. 113, शारदा विहार अटल आवास कोरबा, तहसील एवं जिला-कोरबा (छ.ग.) को सजा सुनाई गई । प्रकरण के अंतर्गत परिवादी छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी मर्यादित तुलसीनगर जोन कोरबा द्वारा अभियुक्त अब्दुल रसीद, उम्र 55 वर्ष, पिता अब्दुल हामिद के उपर 3,54,553/- रूपये का विद्युत बिल बकाया होने के फलस्वरूप दिनांक 07.08.2019 को विद्युत विच्छेद किया गया था । पश्चात में विद्युत कंपनी के द्वारा गठित जांच टीम के द्वारा दिनांक 30.11.2022 को अभियुक्त के निवास स्थान की जांच के दौरान पाया गया कि अभियुक्त के द्वारा हुकिंग करके 228 वॉट विद्युत भार की चोरी करते हुए परिवादी कंपनी को रूपये 2795/- की क्षति कारित की गई है । परिवादी द्वारा अभियुक्त के विरूद्ध विद्युत चोरी के संबंध में न्यायालय विशेष कोरबा। भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध छत्तीसगढ़ बिजली कर्मचारी संघ महासंघ के द्वारा पॉवर कंपनी प्रबंधन के वादा-खिलाफी और बिजली कर्मियों के पुरानी पेंशन योजना, संविदाकर्मियों के नियमितिकरण सहित विभिन्न ज्वलंत मांगों/समस्याओं का निराकरण नही किये जाने के विरोध में पॉवर कंपनी प्रबंधन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। संघ के द्वारा प्रबंधन को प्रथित आंदोलन की सूचना पत्र में कहा गया है, संघ के द्वारा पुरानी पेंशन योजना बहाली, संविदाकर्मियों के नियमितीकरण, तकनीकी भत्ता संघ सहित विभिन्न ज्वलंत समस्याओं/मांगो को लेकर पत्र दिया गया, जिन पर प्रबंधन के साथ अनेको बार द्विपक्षीय बैठकें हुई, लेकिन आश्वासन के अनुरूप अभी तक कोई सकारात्मक निर्णय नही लिया गया।

बिजली कर्मचारी संघ-महासंघ ने पुन: किया आंदोलन का आगाज

* 29 अगस्त को जिला व क्षेत्रीय स्तर प्रदर्शन व ज्ञापन तथा 9 अक्टूबर को होगा मुख्यालय का घेराव

कर्मचारियों में व्याप्त असंतोष और कंपनी प्रबंधन के वादाखिलाफी के विरोध में महासंघ के द्वारा फिर एक बार सड़क पर उतरकर जोरदार आंदोलन का आगाज कर दिया है, जिसके तहत आंदोलन के पहले चरण में आगामी 29 अगस्त को पूरे प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों व क्षेत्रीय मुख्यालयों में आमसभा व धरना/प्रदर्शन किया जाएगा, फिर रैली के माध्यम से प्रधानमंत्री भारत सरकार, मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन एवं चैयरमैन, पावर कंपनी के नाम पर जिला कलेक्टर एवं मुख्य अभियंता के नाम को ज्ञापन सौपा जाएगा। महासंघ के महामंत्री नवरतन बरेठ ने बताया कि आगामी 29 अगस्त के प्रथम चरण के आंदोलन के लिए पूरी तैयारी कर ली गई है पूरे प्रदेश के सभी 33 जिलों में पदाधिकारियों को अलग-अलग जिलों में जिम्मेदारी दी गई है तथा वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। कोरबा में अखिल भारतीय मंत्री व विद्युत प्रभारी राधेश्याम जायसवाल, बिलासपुर में महासंघ के अध्यक्ष संजय तिवारी व एस.के. मजूमदार, रायपुर में अखिल भारतीय विद्युत मजदूर महासंघ के उपमहामंत्री हरीश चौहान, दुर्ग में बी.एस. राजपूत, राजनांदगांव में संयुक्त महामंत्री शिवेंद्र केशव दुबे, बस्तर में कार्यकारी अध्यक्ष तेज प्रताप सिन्हा व महामंत्री नवरतन बरेठ, रायगढ़ में एल.पी. कटकवार, अम्बिकापुर में दौलत चौहान आदि शामिल होंगे। सभी जगह जोरदार प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा जाएगा। इसके बाद रायपुर मुख्यालय में रैली व घेराव की रणनीति बनाई जाएगी।

सहकारी बैंक का संचालन अब होगा सरकारी परिसर में

बम्हनीडीह। अब तक किराए के भवन में संचालित हो रहा जिला सहकारी बैंक बम्हनीडीह जल्द ही अपने शासकीय भवन से कार्य करने लगेगा। दरअसल, बैंक का भवन निर्माण कार्य वर्षों पहले जिला सहकारी बैंक मर्यादित बिलासपुर द्वारा शुरू कराया गया था, लेकिन कागजी अड़चनों की वजह से यह अधूरा रह गया था। इस समस्या को लेकर पूर्व सरपंच मालती राजकुमार पटेल ने लगातार पहल की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से पत्राचार कर अधूरी कागजी कार्यवाही पूरी करवाई और जिला सहकारी बैंक मर्यादित बिलासपुर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुनील सोढ़ी से मिलकर भवन में शीघ्र बैंक संचालन की मांग रखी।
पूर्व सरपंच की इस पहल पर सीईओ सुनील सोढ़ी स्वयं बम्हनीडीह पहुंचे और भवन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद उन्होंने भरोसा दिलाया कि आगामी 1 नवंबर से पहले बैंक का संचालन बाजार मोहल्ला स्थित नए भवन से शुरू कर दिया जाएगा। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि राजकुमार पटेल, बजरंग दल जिला सह संयोजक मयंक सराफ सहित अन्य गणमान्य नागरिक भी मौजूद रहे। नगरवासियों का मानना है कि भवन के पूर्ण होने से अब बैंकिंग कार्यों में लोगों को सुविधा मिलेगी और किराए पर संचालित व्यवस्था से मुक्ति मिलेगी।

काम के दौरान ओएचई से झुलसे मजदूर की हालत नाज़ुक, पल्ला झाड़ा

चांपा/बिलासपुर। बिलासपुर के कोचिंग डिपो में ओएचई तार की करंट से झुलसे मजदूर के लिए अब आंदोलन शुरू हो गया है। रेलवे प्रशासन और ठेकेदार के हाथ खड़े करने के बाद परिजन के साथ समाज के लोगों ने बुधवार को दोबारा डीआरएमऑफिस का घेराव कर दिया।

इस दौरान धरना-प्रदर्शन कर जमकर नारेबाजी की। साथ ही गंभीर रूप से घायल युवक के इलाज में मदद और आर्थिक सहायता देने की मांग की। उन्होंने मदद नहीं मिलने पर अब उग्र आंदोलन करने की चेतावनी भी दी है।

इस हादसे में बुरी तरह झुलसे श्रमिक परिवार की जिंदगी पूरी तरह बदल गई है। कल तक खुशी से परिवार चलाने वाला प्रताप बर्मन जिंदगी और मौत से जूझ रहा है। अपोलो अस्पताल में वह बदहवास पड़ा है। उसकी स्थिति बेहद नाजुक है। पिछले 5 दिनों से उसका इलाज चल रहा है।

लेकिन, रेलवे प्रशासन और ठेकेदार ने अब तक प्रताप बर्मन और उसके परिवार को किसी तरह से आर्थिक सहायता नहीं दी है। इसके चलते रेलवे प्रशासन और ठेकेदार के खिलाफ आक्रोश भड़क रहा है।

जांजगीर-चांपा जिले के मुलमुला निवासी प्रताप बर्मन रेलवे में ठेका श्रमिक है। वो कोचिंग डिपो में इलेक्ट्रिशियन का काम करता है। 23 अगस्त को वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन के एक्स्ट्रा कोच का एसी सुधारते समय प्रताप बर्मन ओएचई तार की करंट की चपेट में आ गया, जिससे उसकी हालत गंभीर है।

परिजन का आरोप है कि, बिजली सप्लाई बंद किए बगैर ही प्रताप को कोच के ऊपर चढ़ा दिया गया था। सुरक्षा से खिलवाड़, अफसर और ठेकेदार की लापरवाही के चलते ये हादसा हुआ। हादसे के बाद बुरी तरह से झुलसे प्रताप को अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इस हादसे के बाद परिजन और समाज के लोगों में रेलवे प्रशासन और ठेकेदार के खिलाफ आक्रोश है। वजह यह है कि अब तक घायल युवक और परिवार को कोई मदद नहीं मिली है। वहीं, घटना के बाद रेलवे प्रशासन और ठेकेदार ने जिम्मेदारी से हाथ खड़े कर दिए हैं। इससे नाराज परिजन और समाज के लोगों ने बुधवार को ßक्रू ऑफिस का घेराव कर धरना-प्रदर्शन किया।

इस दौरान उन्होंने जमकर नारेबाजी करते हुए प्रताप बर्मन और परिवार को न्याय दिलाने की मांग की। उनकी मांग है कि घायल श्रमिक प्रताप बर्मन के इलाज का पूरा खर्च वहन किया जाए। परिवार को मुआवज़ा देने और नौकरी की व्यवस्था की जाए। उन्होंने यह भी चेतावनी दी है कि अगर रेलवे प्रशासन संवेदनशीलता नहीं दिखाएगा तो उग्र आंदोलन किया जाएगा। साथ ही आंदोलन तेज किया जाएगा।

परिजनों का आरोप है कि, रेलवे में इलेक्ट्रिक विभाग में काम के लिए सुरक्षा के कड़े नियम है। चाहे रेलकर्मी हो या फिर ठेका श्रमिक, उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी रेल प्रशासन की है। रेलवे में काम के दौरान सुरक्षा के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं। लेकिन, घायल श्रमिक की जान बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। रेलवे में सीधे तौर पर श्रम कानून का उल्लंघन किया जा रहा है।

धरना-प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि, रेलवे के अधिकारी ठेकेदार को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। किसी भी ठेका कंपनी में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी तय की जाती है। लेकिन, रेलवे प्रशासन इस मामले में ठेकेदार के बचाव में काम कर रहे हैं। उनकी मांग है कि इस हादसे के लिए जवाबदेही तय की जाए और दोषी रेल अफसरों के साथ ही ठेका कंपनी पर सख्त कार्रवाई की जाए।

प्रतिबंधित शस्त्र बिक्री पर अमेजन को नोटिस थमाया

सक्ती। युवक के पास से पुलिस ने प्रतिबंधित बटन चाकू बरामद किया है। जांच में खुलासा हुआ कि आरोपी ने यह खतरनाक चाकू ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म अमेजन इंडिया से ऑर्डर कर खरीदा था। अब पुलिस ने अमेजन इंडिया को नोटिस थमा दिया है और तीन दिन में जवाब मांगा है कि आखिर उनके प्लेटफॉर्म पर ऐसा अवैध हथियार कैसे बिक रहा है।

पुलिस अधीक्षक सक्ती के निर्देश पर जारी नोटिस में साफ कहा गया है कि शस्त्र अधिनियम, 1959 की धारा 5 और 20 के तहत ऐसे बटन चाकू, स्वचालित ब्लेड और आक्रामक हथियारों की बिक्री व डिलीवरी पूरी तरह गैरकानूनी है। अब पुलिस ने अमेजन से जवाब मांगते हुए यह भी कहा है कि अगर प्लेटफॉर्म इस अपराध में सहभागी पाया गया, तो कंपनी व जिम्मेदार अधिकारियों पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी। पुलिस ने अमेजन इंडिया को यह निर्देश भी दिया है कि छत्तीसगढ़ राज्य और विशेष रूप से सक्ति जिले में किसी भी प्रकार के प्रतिबंधित हथियार की बिक्री और डिलीवरी तत्काल रोकी जाए। यदि कंपनी ने तय समय पर संतोषजनक जवाब नहीं दिया या बिक्री बंद नहीं की, तो अमेजन इंडिया और उससे जुड़े जिम्मेदार अफसरों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दामोदर प्रसाद की पुण्यतिथि मनाई

जांजगीर। ग्राम कुरियारी, शिवरीनारायण में प्रख्यात नागरिक व भूतपूर्व सैनिक, सरपंच तथा भाजपा नेता स्व. दामोदर प्रसाद पाण्डेय की प्रथम पुण्यतिथि 23 अगस्त 2025 को श्रद्धा एवं गरिमामय ढंग से मनाई गई। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्यजन, समाजसेवी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी ने स्व. पाण्डेय के ग्राम विकास में किए गए महत्वपूर्ण योगदान और पार्टी संगठन को मजबूत करने वाली भूमिका को याद किया।
पुण्यतिथि आयोजन समिति के तत्वावधान में विभिन्न सामाजिक एवं विकासात्मक कार्यक्रमों की श्रृंखला भी शुरू की गई है। इस दौरान ग्राम कुरियारी के छात्र दक्ष कश्यप, जिन्होंने सैनिक स्कूल व नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की, उन्हें सम्मानित किया गया। समिति ने आगे भी हर वर्ष ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन तथा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर, प्रतिभा सम्मान एवं ट्राईसाइकिल वितरण जैसी गतिविधियों को नियमित करने का संकल्प लिया है। कार्यक्रम के दौरान ग्राम पंचायत कुरियारी में सामुदायिक मंगल भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजन भी सम्पन्न हुआ, जिससे ग्रामीण सुविधाओं में वृद्धि होगी।
भाजपा मंडल शिवरीनारायण के अध्यक्ष लोकेश

शुक्ला, नगर पंचायत अध्यक्ष राहुल थवाईत, पार्षद एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे। इंजीनियर रवि पाण्डेय ने अपने भाषण में स्व. दामोदर प्रसाद पाण्डेय के ग्राम विकास एवं पार्टी कार्यों में योगदान को मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि पाण्डेय जी के पुत्र गण भी अपने पिता की यादों को संजोते हुए ग्राम के विकास में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। अंत में स्व. पाण्डेय के पुत्र विजय पाण्डेय और अजय पाण्डेय ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। ग्राम के सरपंच प्रतिनिधि मनोज कश्यप ने भी सभी का आभार व्यक्त किया। यह आयोजन स्व. दामोदर प्रसाद पाण्डेय की यादों को सजीव रखने एवं ग्राम की समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

मवेशियों के तस्कर भेजे गए जेल

जांजगीर। मवेशियों की तस्करी के मामले में पामगढ़ पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से 5 मवेशी व एक छोटा हाथी वाहन जब्त किया। गिरफ्तार आरोपियों में त्रिवेन्द्र यादव (19 वर्ष) व शत्रुहन यादव (55 वर्ष), दोनों निवासी कुरेली थाना बिल्हा, जिला बिलासपुर हैं। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि ग्राम ससहा के अटल चौक के पास दो व्यक्ति मवेशियों को पकड़कर सफेद रंग के वाहन में लोड कर रहे हैं और ससहा से जोंधरा की ओर जा रहे हैं। सूचना पर थाना पामगढ़ की टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की। संदिग्ध वाहन को रोककर पूछताछ करने पर आरोपियों की पहचान हुई। वाहन की जांच करने पर उसमें रस्सियों से बंधे पांच मवेशी मिले।

राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा के शुभारंभ साथ जागरूकता अभियान पर काम

मालखरौदा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पूजा अग्रवाल तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मालखरौदा के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. मृत्युंजय राठौर और ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर थानेश्वर पटेल के मार्गदर्शन में 40वां नेत्रदान पखवाड़ा आयोजित किया गया।
कार्यक्रम में डॉ. आर.के. राज (शिशु रोग विशेषज्ञ), जितेंद्र सिंह राज (स्टोर इंचार्ज), फार्मासिस्ट ऋतु नेताम, पुरुष स्वास्थ्य कार्यकर्ता रवि खांडे, नेत्र सहायक अधिकारी राजेंद्र लहरे, सुरेश मनहर, दिकपाल टंडन, भूपेश राठौर, मुकुंद कौशिक और विष्णु यादव सहित स्वास्थ्य केंद्र के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बताया गया कि देश और छत्तीसगढ़ में 1500 से अधिक नेत्र रोगी कॉर्निया की खराबी के कारण अंधत्व का जीवन जीने को मजबूर हैं। ऐसे लोगों की मदद के लिए नेत्रदान एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। जनजागरूकता के माध्यम से लोगों को नेत्रदान के लिए प्रेरित करने की अपील की गई। साथ ही बताया गया कि सभी प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में नेत्र जांच की सुविधा उपलब्ध है। इच्छुक नागरिक नेत्रदान के लिए पंजीयन कर सकते हैं।

रात में लूट की नियत से घर के अंदर घुसा था, आरोपी गिरफ्तार

जांजगीर। थाना अकलतरा क्षेत्र के कल्याणपुर में 24 अगस्त की रात करीब 1 बजे एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई, जहां एक आरोपी ने घर में घुसकर महिला से मंगलसूत्र लूटने की कोशिश की। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को हिरासत में लिया और उसे न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

आरोपी की पहचान चेतन महंती (36 वर्ष), निवासी वार्ड क्रमांक 38, थाना जीआरपी भिलाई-3, जिला दुर्ग के रूप में हुई है। आरोपी रात के अंधेरे में राकेश दास के घर में घुसा, जहां उसकी मां बरामदे में सो रही थी। आरोपी के हाथ में हंसिया था और वह महिला के गले से मंगलसूत्र छीनने की कोशिश कर रहा था। महिला के चिल्लाने पर घर के अन्य परिजन जाग गए।

घटना के दौरान आरोपी ने हंसिया महिला के गले पर रखकर धमकी दी कि अगर कोई पास आया तो वह उसका गला काट देगा और सभी को जान से मार देगा। इस घटना से पीड़ित परिवार डर और दहशत में आ गया। महिला ने किसी तरह खुद को बचाते हुए शोर मचाया, जिससे मोहल्ले के लोग जमा हो गए। लोगों की मदद से आरोपी को पकड़कर पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही थाना अकलतरा पुलिस एवं डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची और आरोपी को हिरासत में लेकर उसके खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना में लिया गया है।

फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र से जमीन हड़पने की कोशिशे दो भाई गिरफ्तार

सक्ती। सक्ती जिले में दो भाइयों ने नजूल भूमि हड़पने के लिए अपने चाचा का फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र बनवाया। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

आरोपी द्वारिका उर्फ कुंदन देवांगन (62) और सीताराम देवांगन (50) ने अपने चाचा देवान देवांगन की वर्ष 2000 में हुई मृत्यु के बाद फर्जी मृत्यु प्रमाणपत्र बनवाया। दोनों ने 2021 में एसडीएम कार्यालय में जमीन का नामांतरण कराने का आवेदन किया।

कसेरपारा वार्ड क्रमांक 2 में स्थित 2422 वर्गफुट का नजूल भूखंड खाली पड़ा था। मृतक देवान देवांगन का कोई वारिस नहीं था। दोनों भाइयों ने इस जमीन को हड़पने के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार किए।

कचरा बाई देवांगन और उनके पुत्र राकेश कुमार ने नामांतरण पर आपत्ति जताई। मामला न्यायालय पहुंचा। जांच में आरोपियों ने स्वीकार किया कि उन्होंने फर्जी प्रमाणपत्र बनवाया और चार महीने पहले उसे जला दिया।

सक्ती एसडीओपी मनीष कुंवर के अनुसार, गवाहों के बयान और अन्य साक्ष्यों के आधार पर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

बच्चे का अपहरण कर 10 लाख पाने का प्लान हो गया फेल

मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने तीन आरोपियों को पकड़ा

जांजगीर-चांपा। जिले में मुलमुला थाना क्षेत्र के लगरा गांव से 9 वर्षीय सम्राट टंडन का अपहरण कर लिया गया। पुलिस ने 48 घंटे के भीतर बच्चे को बिलासपुर जिले के रतनपुर क्षेत्र से सकुशल बरामद कर लिया।

जांच में पता चला कि अपहरण के पीछे बच्चे का चचेरा भाई राहुल टंडन था। उसके साथ दो अन्य साथी प्रशांत मैना और उमेश दिवाकर भी शामिल थे। आरोपियों ने पुराने जमीन बंटवारे की रंजिश और पैसों की लालच में यह वारदात की। घटना से 5 दिन पहले ही अपहरण की योजना बनाई गई थी। सोमवार शाम को राहुल ने सम्राट को बहला-फुसलाकर वाहन में बिठाया और अपने साथियों की मदद से ले गया। आरोपियों की योजना परिवार से 10 लाख रुपए की फिरौती मांगने की थी।पुलिस और साइबर टीम ने 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज की जांच की। हजारों मोबाइल नंबरों की तकनीकी जांच के बाद अपहरणकर्ताओं का पता लगाया। पुलिस ने आरोपियों से दो टेम्पो ट्रैक्स और एक गामा तूफान वाहन जब्त किए हैं।गिरफ्तार आरोपियों में 25 वर्षीय राहुल टंडन, 19 वर्षीय प्रशांत कुमार मैना और 19 वर्षीय उमेश दिवाकर शामिल हैं। सम्राट के लापता होने के 48 घंटों में उसके परिवार ने बेहद मुश्किल समय का सामना किया। मां की आंखों से आंसू नहीं रुक रहे थे। पूरा गांव बच्चे की सलामती के लिए प्रार्थना कर रहा था।

छत्तीसगढ़ पेंशनधारी कल्याण संघ की बैठक 31 को

जांजगीर। छत्तीसगढ़ पेंशनधारी कल्याण संघ, संयुक्त तहसील चांपा, सारागांव एवं बम्हनीडीह की बैठक आगामी 31 अगस्त की दोपहर 12 बजे से मां गायत्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सारागांव में आयोजित की जाएगी। इस महत्वपूर्ण बैठक में 80 वर्ष पूर्ण कर चुके वरिष्ठ पेंशनरों और नवीन सदस्यों का सम्मान किया जाएगा।
साथ ही संगठन की गतिविधियों पर चर्चा व प्रांतीय स्तर पर चल रहे दो सूत्रीय मांगों को लेकर चलाए जा रहे पोस्टकार्ड अभियान पर विचार-विमर्श किया जाएगा। बैठक के दौरान छत्तीसगढ़ शासन वित्त विभाग द्वारा 14 अगस्त को जारी अतिरिक्त पेंशन आदेश के प्रावधानों की जानकारी भी पेंशनरों को दी जाएगी, ताकि वे नवीन नियमों से भलीभांति परिचित हो सकें।

मंत्री के प्रवास का असर, नगर की ट्राफिक व्यवस्था हुई काफी बेहतर

जांजगीर। शहर में आम दिनों में जहां ट्रैफिक व्यवस्था बदहाल रहती है, वहीं 27 अगस्त को राज्यपाल और मंत्री रामविचार नेताम के आगमन के चलते शहर में अस्थायी रूप से व्यवस्था में सुधार देखने को मिला। प्रशासनिक अमला ट्रैफिक व्यवस्था को दुरुस्त करने में जुटा रहा। छुट्टी के दिन भी नगर पालिका की टीम सक्रिय रही और सड़कों पर घूम रहे मवेशियों को हटाया। आम दिनों में बीटीआई चौक से कचहरी चौक तक सड़क के दोनों ओर बेतरतीब वाहन खड़े होने से जाम की स्थिति रहती है, लेकिन वीआईपी मूवमेंट को देखते हुए ट्रैफिक पुलिस ने रास्ते को क्लियर कराया। लोगों ने कहा कि अगर व्यवस्था ऐसे ही सुधरना है तो मंत्रियों के दौरे लगातार होते रहना चाहिए।

शातिर चोरों ने किराना दुकान से कटे-फटे नोट व सामान को किया पार

अकलतरा। नगर में लगातार हो रही चोरियों से लोगों में भय का माहौल है। बीती रात नगर के बजरंग चौक में स्थित सुनील किराना स्टोर में चोरों ने बड़ी चोरी की वारदात को अंजाम दिया।
चोरों ने दुकान के शटर में लगे ताले को तोड़कर अंदर प्रवेश किया और दुकान में रखे 15 लीटर तेल के 5 टीपे, काउंटर में रखे लगभग 10 हजार रुपए चिल्लर और 10 से 15 हजार रुपए के फटे पुराने नोट पार कर दिए। चोरी की कुल अनुमानित राशि लगभग 25 हजार रुपए बताई गई है। दुकान संचालक सुनील जैन जब सुबह करीब 7.30 बजे दुकान पहुंचे तो उन्होंने शटर में लगा ताला टूटा हुआ पाया। शटर का निचला हिस्सा भी क्षतिग्रस्त था। उन्होंने तत्काल पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी भास्कर शर्मा पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस की उपस्थिति में जब दुकान का शटर उठाकर जांच की गई तो चोरी की पुष्टि हुई। थाना प्रभारी भास्कर शर्मा ने बताया कि अज्ञात चोरों के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया गया है और विवेचना प्रारंभ कर दी गई है। पुलिस द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण करने के साथ-साथ आसपास लगे सीसी कैमरों की जांच की जा रही है। साथ ही साइबर टीम की मदद से मोबाइल टावर की कॉल डिटेल भी खंगाली जा रही है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि जल्द ही चोरों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पांच दिन पहले माता के मंदिर में हो चुकी है चोरी पांच दिन पूर्व 22 अगस्त को नगर के महामाया मंदिर के पास स्थित जय मां संतोषी मंदिर में भी चोरी हुई थी। चोरों ने मंदिर में घुसकर दानपेटी में रखे पैसे चुरा लिए थे। मोहल्लेवासियों द्वारा पुलिस को सूचना देने के बाद विवेचना की बात कही गई थी। पांच दिनों के भीतर नगर में दो बड़ी चोरियों की घटनाएं घटित होने से रात्रिकालीन सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं। नागरिकों में भय और असुरक्षा की भावना घर कर रही है। नगरवासियों ने रात्रिकालीन गश्त बढ़ाने और

अपराधियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग पुलिस से की है।

शिवम ने मिट्टी के गणेश की मूर्ति बनाई

हरदीबाजार। युवाओं के साथ बालको में भगवान गणेश की आराधना को लेकर खासा उत्साह रहता है। शांति नगर निवासी बालक शिवम राठौर ने खुद की बनाई मिट्?टी के गणेश की मूर्ति बुधवार को गणेश चतुर्थी पर स्थापित की है। भगवान गणेश प्रथम पूज्य देव भी है। हर शुभ कार्य से पहले भगवान गणेश की आराधना होती है।
बाजार में बिकने वाली प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी) की मूर्ति पानी में नहीं घुलने से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है, इसलिए शिवम ने घर में ही मिट्?टी के गणेश की मूर्ति बनाकर गणेश चतुर्थी पर विधि-विधान से स्थापित की है। साथ ही बढ़ती महंगाई से मूर्तियों की सजावट के सामान व रंगों के दाम भी बढ़ गए हैं।

नाम सुधार सूचना

मैं भरत कुमार आत्मज जगन प्रसाद जाति रजवार आयु 53 वर्ष निवास वार्ड नंबर 20 खरवत तहसील बैकुंठपुर जिला कोरिया छत्तीसगढ़ का निवासी हूं मेरा आधार क्रमांक कार्ड क्रमांक 9831 9 258 5371 है जिसमें मेरा घरेलू नाम नंद भरत दर्ज है इसको सुधार कर वास्तविक नाम भरत कुमार दर्ज करना चाहता हूं।
सूचना ग्रहण करें।

भरत कुमार आत्मज जगन प्रसाद
वार्ड क्रमांक 20 ग्राम खरवत
तहसील बैकुंठपुर
जिला कोरिया छत्तीसगढ़
मो.7049706570

अनमोल वचन......

हम जिस पर सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं, अक्सरहमे वही लोग सबसे ज्यादा धोखा देते है।

कानूनी समाधान की पहल

केंद्र सरकार अब ऐसे विधेयक ले आई है, जिनके कानून बनने के बाद गंभीर आपराधिक मामलों में जेल जाने की स्थिति में प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्री और राज्यों के मंत्रियों को उनके पद से हटाने का प्रावधान हो जाएगा। लोकसभा चुनाव से पहले दो मुख्यमंत्री पद पर रहते गिरफ्तार किए गए थे। उनमें से झारखंड के हेमंत सोरेन ने तो इस्तीफा देकर भारत की संवैधानिक व्यवस्था को नैतिक दुविधा से बचा लिया, लेकिन जब बारी अरविंद केजरीवाल की आई, तो उन्होंने भारत की राजनीतिक व्यवस्था में आ रही चरमराहट को उजागर कर देने की रणनीति अपनाई। केजरीवाल ने इस्तीफा नहीं दिया। तब यह अजीबोगरीब स्थिति बनी कि एक मुख्यमंत्री जेल में रहते हुए वहीं से सरकार चलाने का दावा कर रहा था। भारत में आज जो सियासी सूरत है, उसके बीच ऐसी विडंबनाओं की गुंजाइश लगातार बनी हुई है। नियम या कानूनों को जब अत्यधिक खींच दिया जाता है, तो मर्यादाओं का तार-तार होना स्वाभाविक परिणाम होता है। अब केंद्र ने ऐसी परिस्थितियों के कानूनी समाधान की पहल की है। वह ऐसे विधेयक ले आया है, जिनके कानून बनने के बाद गंभीर आपराधिक मामलों में जेल जाने की स्थिति में प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्री और राज्यों के मंत्रियों को उनके पद से हटाने का प्रावधान हो जाएगा। जेल गए पदाधिकारी की रिहाई के बाद उसे पद पर वापस लाने का प्रावधान भी किया जा रहा है। अगर आज यह धारणा होती कि संवैधानिक व्यवस्था सामान्य ढंग से काम कर रही है और कानून लागू करने वाली एजेंसियां निष्पक्षता से ठोस तथ्यों के आधार पर कदम उठाती हैं, तो प्रस्तावित नए कानून को एक स्वस्थ पहल माना जाता। लेकिन दुर्भाग्य से आज धारणाएं उसके उलट हैं। प्रचलित धारणा यह है कि कानून लागू करने वाली एजेंसियां राजनेताओं के दल और उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता को देख कर उनके अपराध तय करती हैं। ऐसे में प्रस्तावित कानून पर विपक्षी खेमों में आशंका पैदा होना लाजिमी प्रतिक्रिया माना जाएगा। इस पर केंद्र ने विपक्ष से कोई संवाद नहीं किया है। इस कारण आशंकाओं की गुंजाइश और भी ज्यादा है। इसलिए उचित होगा कि ऐसा कानून लागू करने के पहले केंद्र उस पर सभी पक्षों को भरोसे में ले। इस बारे में आम सहमति बनाए जाने की जरूरत है। वरना, प्रस्तावित कानून को सत्ता के केंद्रीकरण के एक और प्रयास के रूप में देखा जाएगा।

राशिफल

मेष राशिः आज आपके लिए दिन अनुकूल रहने वाला है। आज आपको सोने-चाँदी के बिजनेस में बड़ा धन लाभ होगा। आज आप प्रोफेशनल कार्यो के साथ-साथ अपने निजी कार्यों को भी पूरा करेंगे। आज सामाजिक गतिविधियों में आपकी उपस्थिति और विचार सराहनीय रहेंगे। आज जीवनसाथी के साथ आपका ताल-मेल बना रहेगा, आपके घर में किसी कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है।

वृषभ राशिः वृष राशि- आज का दिन आपके लिए खास रहने वाला है। आज आपको व्यवसाय में बड़ा धन लाभ होगा , जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। आज आप किसी मुद्दे के ऊपर जीवनसाथी से सलाह-मशविरा कर सकते हैं। आज किसी प्रोजेक्ट को लेकर ऑफिशियल यात्रा संभव है, आप सारी तैयारी अच्छे से कर लें।

मिथुन राशिः आज का दिन आपके लिए सफलता दिलाने वाला है। आज आप किसी नए काम की शुरुआत करेंगे, जिसमें आपको अच्छा लाभ होगा। आज आप माता-पिता के साथ किसी धार्मिक स्थल पर जा सकते हैं , जिससे आपको मानसिक शांति मिलेगी। आज आप घर - परिवार संबंधी समस्याओं को सुलझाने में सफल रहेंगे और आपको कहीं से अटके हुए धन की प्राप्ति होगी।

कर्क राशिः आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज आप व्यापार को और बड़ा बनाने का प्रयास करेंगे, जिसके लिए आप ऑफिस में मीटिंग कर सकते हैं। आज आप अपने खान-पान को लेकर डाइट प्लान तैयार कर सकते हैं। आज आपको स्वयं की सूझबूझ से लिए गए निर्णय के उचित परिणाम हासिल होंगे। इस राशि के विद्यार्थियों को आज इंटरव्यू या करियर से संबंधित क्षेत्र में सफलता मिलने की पूरी संभावना है।

सिंह राशिः आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। आज आपकी व्यापारिक गतिविधियां सुचारु रूप से चलती रहेंगी, आप किसी बड़ी डील को फ़ाइनल कर सकते हैं। आज ऑफिस में आपके काम को लेकर तारीफ होगी और बॉस आपके प्रमोशन की बात कर सकते हैं। आज आपके घर का वातावरण मधुर और खुशनुमा बना रहेगा।

कन्या राशिः आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज आप रुके हुए कार्यों को पूरा करेंगे, जिससे आपकी व्यस्तता बनी रहेगी। आज आप किसी भी निर्णय को लेने से पहले अच्छे से सोच-विचार कर लें, जिससे बाद में कोई पछतावा न हो।

तुला राशिः आज का दिन आपके लिए बेहतरीन रहेगा। आज आपको व्यापार में अच्छा लाभ होगा और आपके व्यावसायिक रिश्ते भी मजबूत बनेंगे। इस राशि के जो व्यक्ति विदेश जाने का मन बना रहे थे , आज आपको किसी से मदद मिलेगी। आज आपके तय किए काम समय से पूरे होते हुए नजर आ रहे हैं साथ ही कुछ काम वक्त से पहले पूरे करने की वजह से आपको प्रसन्नता मिलेगी।

वृश्चिक राशिः आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आज आप किसी व्यक्ति की मदद से अपने कार्यों को पूरा करने में समर्थ रहेंगे, जिससे आपको खुशी मिलेगी। आज ऑफिस में बॉस आपको किसी नए प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी दे सकते हैं, जिसे आप बखूबी पूरा करेंगे।

धनु राशिः आज का दिन आपके लिए खुशहाल रहने वाला है। आज आप पार्टनरशिप में किसी बिजनेस की शुरुआत कर सकते हैं, भविष्य में आप अच्छा लाभ कमायेंगें। इस राशि के सामाजिक कार्यों में कार्यरत व्यक्ति सामाजिक हित के लिए किसी विशेष मुद्दे को उठा सकते हैं। आज आपका ट्रांसफर मनचाही जगह पर हो जायेगा , जिससे आपको खुशी मिलेगी।

मकर राशिः आज का दिन आपके लिए मिला - जुला रहेगा। आज आप व्यापारिक लेन-देंन में सारी चीजें अच्छे से चेक करें और कर्मचारियों के साथ अच्छे से व्यवहार करें। आज आपको पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा, जिससे आपके बहुत से अटके काम पूरे होंगे। आज आप दाम्पत्य जीवन की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे, जिसमें जीवनसाथी का साथ मिलेगा।

कुंभ राशिः आज का दिन आपके लिए शानदार रहेगा। आज आप अपने सपनों को पूरा करने में काफी हद तक सफल रहेंगे। आज आपके दाम्पत्य जीवन में नयी जिम्मेदारियां आएंगी , जिसे आप बखूबी निभायेंगे। आज आपको किसी व्यक्ति की मदद करने का मौका मिलेगा , जिसे आप नजरंदाज न करें। आज आप भाई-बहनों के साथ मार्केट शॉपिंग करने जा सकते हैं और आप उन्हें कुछ गिफ्ट भी दिलायेंगे।

मीन राशिः आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज आपको रोजगार में नए अवसर प्राप्त होंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। आज आपके जमीन जायदाद से जुड़े कार्य प्रगति की ओर बढ़ेंगे। आज आप किसी मामले में घर के वरिष्ठ सदस्यों की सलाह ले सकते हैं, जिससे वो आसानी से सुलझ जायेगा ।

भारत के डॉग-लवर्स में मातम

//श्रुति व्यास//

सीधी बात पर आते हैं। भारत के डॉग-लवर्स मातम में हैं। टूटे हुए, बिखरे हुए, जैसे सरकार उनके ड्रॉइंग रूम से 'ब्रूनो' को सोफ़े से उठा ले गई हो। टीवी पर रोना, सड़कों पर जाम, मुख्य न्यायाधीश तक अर्जी — वह भी दो बार, क्योंकि 1.4 अरब की आबादी वाले इस मुल्क में, यही है इमरजेंसी। उधर असली भारत में — बादाम लट्टे वाले कैफ़े और ट्विटर की दुनिया से बाहर — लोग थोड़ी ज़्यादा गंभीर चीज़ों से जूझ रहे हैं। कोई डेंगू से बच रहा है, कोई मैनहोल से, कोई अपनी जर्जर छत के अगली बारिश में न गिर जाने की दुआ कर रहा है। इस दिवाली ज़रूरी सामान पर जीएसटी 12 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत हो जाएगा। लेकिन किसे फ़र्क पड़ता है। जब तक कुत्ते सुरक्षित हैं, देश खून बहा ले। सो आज सर्वोपरी चिंता है कुत्तों को की!

यहां तक कि बॉलीवुड का पालतू-पागल तबका भी इस आंदोलन में वैसे ही कूद पड़ा है जैसे 'कान्स' फ़ोटो कॉल में कूदता है। दिल्ली का स्कॉच पीता इंटेलिज़ेंसिया, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में बैठकर एप्पल पाई के साथ गुस्से भरे लेख लिख रहा है। यही है अब उनकी लड़ाई। गली का कुत्ता आज भारत का नया नैतिक कम्पास है – बाक़ी कम्पास भले ही चौपट हो चुके हो, एक ऐसे देश में जहां गवर्नेंस मिथक है, क़ानून मज़ाक, और रोज़मर्रा ज़िंदगी बस जुगाड़।

और यह है असली विडंबनाः जिन लोगों को गली के कुत्ते उठाए जाने का ग़म खाए जा रहा है, वे आराम से लंदन और न्यूयॉर्क में रहते हैं – जहां सड़कें साफ़ हैं, कुत्ते बंधे, लाइसेंसशुदा और उनके पीछे सफ़ाई अनिवार्य है। वहां कोई नहीं चिल्लाता है कि सड़क पर रहने का अधिकार चाहिए। पश्चिम में नियम पवित्र हैं, जबकि भारत में वह उत्पीड़न। यहां सुप्रीम कोर्ट की आठ हफ़्ते की डेडलाइन प्रलय हो जाती है। सुधार की मांग नहीं, बस पूरे आदेश को रद्द करने का हंगामा। सवाल है टूटी सड़कों पर भटकते कुत्तों को भला कब से संवैधानिक अधिकार, सांस्कृतिक धरोहर या नैतिक श्रेष्ठता का तमगा मिल गया।

साफ़ कर लें – कोर्ट ने यह नहीं कहा कि कुत्तों को मारो। कहा यह था कि सड़कों से हटाओ, शेल्टर में रखो, व्यवस्था बनाओ। लेकिन यह बहुत बड़ी मांग है। आप अराजकता का महिमामंडन करना पसंद करेंगे, लेकिन ज़रा भी नागरिक अनुशासन गले नहीं उतरेगा। और फिर वही रट – भारत तानाशाही में फिसल रहा है, संस्थान ढह रहे हैं, लोकतंत्र मर रहा है, देश रहने लायक नहीं बचा। मगर एक बार तो न्यायपालिका ने आम आदमी की सोची – उस मज़दूर की बच्ची के बारे में जो अकेले घर लौटते वक़्त झुंडों से घिरी होती है, उस ठेले वाले के बारे में जो रोज़ गली के कुत्तों से जूझता है, उस दिहाड़ी मज़दूर के बारे में जो कुत्ते के काटने का इलाज भी नहीं करवा सकता। अदालत ने आँकड़े देखे, ख़तरे तौले और एक ग़लत को सही करने की कोशिश की। लेकिन आपको इससे भी ऐतराज़ है।

और यह घबराहट क्यों? अचानक रेबीज़ महामारी का डर क्यों, अगर कुत्तों को उठाया गया तो? क्या विज्ञान रातोंरात बदल गया? होना तो यह चाहिए कि आप एक मुकम्मल व्यवस्था मांगते – कामयाब शेल्टर, बेदाग़ लागू करने वाला सिस्टम। लेकिन नहीं। सोशल मीडिया पर मैंने एक महिला का वीडियो देखा – आसमान टूट पड़ा हो जैसे, वह हांफते-रोते कह रही थीः अगर वे मेरे बच्चे ले गए तो मैं मर जाऊंगी।

उनके 'बच्चे' गली के कुत्ते थे और अगर वे बच्चे हैं, तो ट्रैफ़िक में भटकते और कूड़े में खाना खोजते क्यों छोड़े गए? एक और क्लिप में कुत्तों को बच्चों की तरह गोद में लेकर नारे लग रहे थेः यह मेरा अधिकार है सड़क पर जीने का! माफ़ कीजिए, सड़क पर जीना किसी का अधिकार नहीं है – न कुत्तों का, न गायों का, न बंदरों का, और न ही इंसानों का। लेकिन हमारी अभिजात्य बिरादरी असली शेल्टर बनाने या नगरपालिका की क्षमता सुधारने से ज़्यादा नैतिक नाटक पसंद करती है। और उससे भी बदतर – वे उस छोटे लड़के पर एक आंसू नहीं बहाते जो साइकिल चलाने निकला और घर लौटकर नहीं आया। गली के कुत्तों के झुंड ने उसे नोच-नोच कर मार डाला। उसका छोटा शरीर उन दांतों से फाड़ा गया जिन्हें देखने तक से आप इंकार करते हैं।

आप – अमीर, वोक, भौकाली, तृप्त – जिनके पास डिग्रियां हैं, अनुभव है, दिमाग़ है। जब कोर्ट अराजकता में थोड़ा सा भी अनुशासन लाने की कोशिश करती है, तो चिल्लाइए मत। दान अभियान कीजिए, नीति सुझाव दीजिए। रोने की कहानियां और ऑनलाइन पेटीशन मत चलाइए। आपको लगता है न्यूयॉर्क टाइम्स आपके साथ खड़ा है। उनके न्यूज़रूम में वे सिर हिला रहे हैं, या शायद हंस रहे हैं। आपने अपने देश को देश को ही एक व्यंग्य बना दिया है।

मैंने उसी दिन कहा था जब आदेश आयाः समस्या कुत्ते नहीं हैं – हम हैं। और वही अब एक्टिविस्ट, आवारा पशुओं के प्रेमी इसे साबित कर दे रहे हैं।

कुछ तो समझदारी दिखाइए। अब बड़े हो जाइए! सडक पर उन मुद्दों पर बाहर निकलिए जो सच में मायने रखते हैं। पहली बार सरकार ने ऐसा क़दम उठाया है जिसमें जनता की भलाई को अभिजात्य संवेदनाओं से ऊपर रखा गया। ताली बजाइए। आपने प्राग की व्यवस्था देखी है, टोक्यो की सफ़ाई पर वाहवाही की है। क्यों न यहां चाहें? क्यों न दिल्ली को बेहतर, मुंबई को सुरक्षित बनाएं – जहां कुत्तों के काटने के मामले सबसे ज़्यादा हैं? हर बार जब उस दिशा में एक छोटा क़दम उठता है, आप ताली बजाने के बजाय मुंह फुलाते हैं, तंज कसते हैं, या फिर टिकट बुक करके विदेश भागते हैं – उसी विफलता से बचने, जिसे सुधारने से आप इंकार करते हैं। जबकि असख्य असली संकटों में हम-आप और देश है – महंगाई, बेरोज़गारी, जलवायु संकट। लेकिन आप इनके लिए खड़े नहीं होंगे। और अगर सही वक़्त पर सही मुद्दे पर खड़े नहीं हो सकते, तो उस बदलाव की उम्मीद छोड़ दीजिए जिसकी इस देश को ज़रूरत है। आपका नैतिक आक्रोश अब सिर्फ है क्या इंस्टाग्राम रील्स पर कुत्तों के आंसुओं के लिए।

तो सवाल वही – देश जा कहां रहा है?

कहीं नहीं – अगर यही हमारी लड़ाई है। और अगर इस देश का पढ़ा-लिखा तबका सिर्फ़ आवारा कुत्तों के लिए उठ खड़ा हो सकता है, जबकि बाक़ी सबकुछ खुद कुत्तों के हवाले हो चुका है, तो शायद, सचमुच, हमें भी उनके साथ ही जाना चाहिए।

अमित शाह के बयान को लेकर पूर्व जजों का आपस में ही भिड़ना गजब राजनीति है

//नीरज कुमार दुबे //

दरअसल, समस्या इस बात की नहीं है कि कौन सही है और कौन ग़लत। असली चिंता यह है कि पूर्व जजों के समूह अब राजनीति की भाषा में एक-दूसरे से भिड़ रहे हैं। इससे न्यायपालिका की विश्वसनीयता पर चोट पहुँचती है।राजनीति में एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करना, समूहों का टकराना और बयानों की तलवारें चलाना कोई नई बात नहीं है। परंतु हाल के दिनों में यह परंपरा अब न्यायपालिका से जुड़े सेवानिवृत्त जजों तक पहुँच गई है। सलवा जुडूम फैसले और गृहमंत्री अमित शाह की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व जजों के दो खेमों में खुला टकराव सामने आया है। यह दृश्य असहज इसलिए है क्योंकि न्यायपालिका को सदैव राजनीति से ऊपर और निष्पक्षता का प्रतीक माना जाता रहा है। जब पूर्व जज दो समूहों में बाँटकर सार्वजनिक बयानबाज़ी करने लगते हैं, तो यह संदेश जाता है कि न्यायपालिका की गरिमा और स्वतंत्रता केवल काग़ज़ पर बची है, व्यवहार में नहीं।

यह सही है कि कोई भी व्यक्ति सेवानिवृत्ति के बाद अपने विचार रखने के लिए स्वतंत्र है। यदि कोई जज राजनीति में प्रवेश करता है, तो उसे उसी राजनीतिक धरातल पर आलोचना भी सहनी होगी। लेकिन जब बड़ी संख्या में पूर्व न्यायाधीश सार्वजनिक तौर पर बयान देकर किसी नेता या उम्मीदवार के पक्ष-विपक्ष में उतरते हैं, तो वे केवल व्यक्तियों पर असर नहीं डालते बल्कि पूरे न्यायिक समुदाय की निष्पक्षता पर संदेह खड़ा कर देते हैं। दरअसल, समस्या इस बात की नहीं है कि कौन सही है और कौन ग़लत। असली चिंता यह है कि पूर्व जजों के समूह अब राजनीति की भाषा में एक-दूसरे से भिड़ रहे हैं। इससे न्यायपालिका की विश्वसनीयता पर चोट पहुँचती है। लोकतंत्र में अदालतों का सम्मान इसलिए होता है क्योंकि लोग मानते हैं कि वह राजनीति से परे हैं।

यदि यह धारणा ही टूट गई, तो यह न केवल न्यायपालिका बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी घातक होगा। अब समय आ गया है कि पूर्व न्यायाधीश अपने मतभेदों को सार्वजनिक मंच पर उछालने से बचें। व्यक्तिगत राय रखने और सार्वजनिक रूप से राजनीतिक टकराव का हिस्सा बनने में अंतर है। न्यायपालिका की गरिमा बचाए रखना केवल मौजूदा जजों का नहीं, बल्कि सेवानिवृत्त जजों का भी कर्तव्य है। न्यायपालिका का सम्मान इसी में है कि वह राजनीतिक अखाड़ा न बने, बल्कि समाज के लिए नैतिक मार्गदर्शक बनी रहे। जहां तक पूरे विवाद की बात है तो आपको बता दें कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने केरल में दिए भाषण में कहा था कि जस्टिस सुदर्शन रेड्डी ने अपने सलवा जुडूम निर्णय से नक्सलवाद को बढ़ावा दिया। अअमित शाह का दावा था कि अगर वह निर्णय नहीं दिया गया होता तो नक्सलवाद 2020 तक समाप्त हो गया होता। इस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए सर्वोच्च न्यायालय के 18 सेवानिवृत्त न्यायाधीशों ने अमित शाह को पत्र लिखकर उनकी टिप्पणी को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और नाम लेकर हमला करने से बचने की सलाह दी। उनके अनुसार यह न्यायपालिका की गरिमा के खिलाफ है।इसके ठीक अगले दिन 56 सेवानिवृत्त न्यायाधीशों का समूह सामने आया, जिसमें सुप्रीम कोर्ट के चार पूर्व न्यायाधीश और पूर्व मुख्य न्यायाधीश- पी. सदाशिवम, रंजन गोगोई, एके सीकरी और एमआर शाह शामिल थे। इन न्यायाधीशों ने अपने वक्तव्य में कहा कि न्यायिक स्वतंत्रता राजनीतिक बयानबाज़ी की ढाल नहीं बन सकती।

बयान में कहा गया कि बार-बार कुछ पूर्व न्यायाधीश राजनीति से प्रेरित होकर बयान जारी करते हैं और न्यायपालिका को पक्षपाती दिखाते हैं। बयान में कहा गया कि यदि कोई सेवानिवृत्त न्यायाधीश राजनीति में आता है (जैसे जस्टिस रेड्डी ने विपक्ष का उपराष्ट्रपति उम्मीदवार बनकर किया), तो उसे उसी राजनीतिक क्षेत्र में जवाब देना होगा, न कि न्यायपालिका की ढाल के पीछे छिपकर।

देखा जाये तो यह प्रकरण इस बात को उजागर करता है कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता और न्यायाधीशों की व्यक्तिगत राजनीतिक पसंद के बीच की रेखा धुंधली हो रही है। अमित शाह के आलोचक पूर्व जज मानते हैं कि गृहमंत्री का बयान संस्थान की गरिमा पर चोट करता है। वहीं अमित शाह के समर्थन में खड़े न्यायाधीश कहते हैं कि समस्या आलोचना में नहीं, बल्कि पूर्व न्यायाधीशों द्वारा बार-बार राजनीतिक रंग में बयान देने में है। बहरहाल, सलवा जुडूम के फैसले को लेकर शुरू हुआ विवाद अब न्यायपालिका की छवि और स्वतंत्रता पर विमर्श का रूप ले चुका है। अमित शाह की टिप्पणी ने बहस को तेज़ किया, लेकिन उससे भी अधिक चिंता की बात यह है कि पूर्व न्यायाधीश दो खेमों में बंटकर न्यायपालिका को ही राजनीतिक बहस का हिस्सा बना रहे हैं। इस पूरे घटनाक्रम से यही प्रश्न उठता है कि क्या न्यायाधीशों को राजनीति में प्रवेश करने के बाद न्यायिक स्वतंत्रता की आड़ लेनी चाहिए, या फिर उन्हें उसी राजनीतिक धरातल पर खड़ा होकर आलोचना का सामना करना चाहिए।

सब ऐंवे है! झूठ है, अवसरवाद है!

चाहें तो इसे नरेंद्र मोदी का पुण्य मानें या पाप जो उनके हाथों सभी का अर्थ, सभी की औकात खत्म है! फिर भले संसद हो, लाल किले पर प्रधानमंत्री के भाषण की रस्म हो या राष्ट्रपति-उप राष्ट्रपति, रक्षा मंत्री, गृह मंत्री, कैबिनेट, मुख्यमंत्रियों के चेहरों या आरएसएस जैसे संगठनों, एनजीओ, देश की आर्थिक-विदेश-समारिक नीति का मामला हो या विश्व में भारत के अर्थ का। सब ऐंवे ही हो गए हैं। गुरूवार को संसद का सत्र खत्म हुआ। और सत्र से संसद का क्या मान बना? सोचें, याद करें 2014 में संसद और उसका काम कैसा था और अब क्या है? संसद का अब अर्थ केवल स्थगन, हंगामा है। सत्र महज एक रस्म है। कोई उत्पादकता नहीं। स्पीकर- सभापति की कुर्सी पर ओम बिड़ला हो या जगदीप धनखड़ क्या कोई अर्थवान, प्रतिभावान, अनुकरणीय है?15 अगस्त की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का भाषण पढ़ते चेहरा दिखलाई दिया। सोचें, देश के 140 करोड़ नागरिकों में से कितनों ने सुना, किनमें जोश भरा, कितनों को प्रेरित किया? अगले दिन खुद जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से भाषण दिया तो उससे जोश, प्रेरणा की बात तो छोड़े उसकी कितनी टीआरपी रही होगी? उसमें क्या नई बात थी? इस सत्य की गहराई जाननी हो तो याद करें 2014 के 15 अगस्त के दिन लाल किले पर, नरेंद्र मोदी के चेहरे, वाक्यों, टीआरपी के जोश और 2025 के 15 अगस्त के मोदी के भाषण को! मोदी ने संघ को महान बताया! दस साल बाद नागपुर से आरएसएस लाल किले पहुंचा। इसलिए क्योंकि मोदी को अब आरएसएस की जरूरत है। पर आरएसएस के जाप से क्या मोहन भागवत एंड पार्टी जोश में आई होगी? क्या यह जमात भरोसा कर सकती है कि मोदी अब भारत को आत्मनिर्भर बना देंगे? मोदी-अमित शाह भाजपा को सत्ता की बेड़ियों से आजाद कर देंगे? संघ और भाजपा को भी ऐंवे ही, एक पुछल्ला बना देने के बाद वे आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर भाजपा, आत्मनिर्भर संघ की मैसेजिंग के संकल्प में काम करेंगे? लाल किले से आत्मनिर्भर भारत और संघ को नमन वैसा ही छल, वैसा ही रस्मी और दिखावे की नौंटकी है, जिससे अब कुछ भी नहीं सध सकता।

इसलिए पते का सत्य केवल एक है और वह यह कि नरेंद्र मोदी ने बतौर प्रधानमंत्री अपने अर्थ को ग्यारह सालों में पूरी तरह गंवाया है न कि बनाया है!स्वतंत्र भारत के इतिहास में ऐसा पहले कभी किसी प्रधानमंत्री के साथ नहीं हुआ। हिंदी में धाराप्रवाह भाषण नहीं कर पाते एचडी देवगौड़ा तथा मनमोहन सिंह के लाल किले से भाषण को भी देश, समर्थक और विरोधी समभाव सुनते होते थे। प्रधानमंत्री के भले होने, किसान-देशज होने या समझदार या समभावी होने से मनोभावों में एक आदर, एक सम्मान था। फिर मनमोहन सिंह हों या अटल बिहारी वाजपेयी वे खुद लिख-देख-समझ अपनी बात कहते थे। शायद ही कभी किसी का यह प्रायोजन रहा हो कि लाल किले से झूठ के क्या-क्या नए नैरेटिव गढ़ने हैं। तभी कांग्रेस के प्रधानमंत्रियों को भाजपा के वाजपेयी हों या आडवाणी तथा वाजपेयी के भाषण को मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी सभी लाल किले जा कर गंभीरता से सुनते थे। मीडिया में भाषण में मीनमेख निकालने व आलोचना की बेबाकी अलग होती थी। उस नाते तब और अब के लाल किले के भाषण का फर्क अपने आप यह बताता है कि नरेंद्र मोदी ने केवल प्रधानमंत्री के पद को ही आभाहीन नहीं बनाया है, बल्कि पाप-पुण्य के निजी खाते में वह दर्ज कराया है, जिसका उन्हें खुद को भान नहीं है। इसलिए लाल किले से विपक्षी नेता नदारद थे और संसद के ताजा सत्र में प्रधानमंत्री के आने पर विपक्ष के खटकने वाला हो हल्ला था तो वह सब यही बताता है कि बतौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत और भारत के बाहर कितना कुछ गंवाया है! और वह भारत का गंवाना भी है!

तस्वीरों की दुनिया

जम्मू में भारी बारिश के कारण तवी नदी में उफान आने से एक मकान का मलबा आंशिक रूप से ढह गया।

जम्मू-कश्मीर के कटरा में भारी बारिश के बाद भूस्खलन के बाद एक घायल को इलाज के लिए अस्पताल लाया जा रहा है।

जम्मू में भारी बारिश के बाद नदी में आए उफान के कारण जम्मू-पठानकोट राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक पुल का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

जम्मू के भगवती नगर में लगातार बारिश के बाद चौथे तवी पुल का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त होने से वाहन फंस गए।

नई दिल्ली में साक्ष्य प्रक्रिया पर एलजी की अधिसूचना के खिलाफ वकीलों ने तीस हजारी कोर्ट के बाहर विरोध प्रदर्शन किया।

बिहार में मतदाता अधिकार यात्रा के दौरान लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी।

महाराष्ट्र के पालघर ज़िले के वसई तालुका के विरार में एक चार मंजिला इमारत का पिछला हिस्सा एक वॉल पर गिरने के बाद बचाव अभियान चलाते एनडीआरएफ के जवान।

अमेरिका के स्कूल में गोलीबारी से 3 छात्रों की मौत, 20 घायल, हमलावर भी ढेर

मिनियापोलिस, 28 अगस्त [एजेंसी]।

अमेरिका के एक स्कूल में बुधवार को गोलीबारी हो गई। इस घटना में 3 लोगों की मौत हो गई और 20 लोग घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि मरने वालों में हमलावर भी शामिल है, जिसे मौके पर मार गिराया गया। घटना मिनेसोटा के मिनियापोलिस में एक कैथोलिक स्कूल में हुई। यह कैथोलिक स्कूल एक प्राइवेट इलीमेंट्री स्कूल है, जिसमें लगभग 395 छात्र पढ़ते हैं। स्थानीय मीडिया के अनुसार, गोलीबारी उस वक्त हुई, जब बच्चे सुबह के प्रार्थना सभा में मौजूद थे। घटना के बाद अभिभावक सकते में आ गए और मौके पर पहुंचकर बच्चों को घर ले जाते दिखे।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घटना पर दुख जाहिर किया है। मौके पर एफबीआई के अधिकारी भी पहुंच गए हैं। होमलैंड सुरक्षा सचिव क्रिस्टी नोएम ने बताया कि सुरक्षा विभाग स्थानीय अधिकारियों के संपर्क में है और स्थिति पर नज़र रख रहा है।पुलिस के मुताहिक, मंगलवार दोपहर के बाद से गोलीबारी की 3 और घटनाएं भी दर्ज की गई हैं, जिसमें 3 लोगों की मौत हो गई और 7 लोग घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि घटनास्थल पर एक व्यक्ति काले कपड़े में राइफल के साथ देखा गया था। मिनेसोटा के सबसे बड़े इमरजेंसी डिपार्टमेंट हेनेपिन हेल्थकेयर के एक प्रवक्ता ने बताया कि स्थिति से सक्रिय रूप से निपटा जा रहा है। कंपनी की ओर से पोस्ट कर बताया गया कि वे गोलीबारी में घायल हुए मरीजों की देखभाल कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने इस संबंध में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दी। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार को एक बंदूकधारी ने मिनियापोलिस के कैथोलिक स्कूल में गोलीबारी की, जिसमें दो बच्चों की मौत हो गई और 17 अन्य घायल हो गए। इसके बाद उसने खुद को भी गोली मार ली। मरने वाले बच्चों की उम्र 8 और 10 साल थी। बच्चे स्कूल के पहले सप्ताह में प्रार्थना सभा कर रहे थे। मिनियापोलिस के पुलिस प्रमुख ब्रायन ओ हारा ने बताया कि बंदूकधारी के पास एक राइफल, शॉटगन और पिस्तौल थी। बंदूकधारी चर्च की तरफ आया और प्रार्थना सभा के दौरान बेंचों पर बैठे बच्चों पर खिड़कियों से दर्जनों गोलियां चलाईं।

टैरिफ लगाकर अमेरिका कर रहा आर्थिक ब्लैकमेल

चुनौतियों से निपटने को भारत को झोंकनी होगी पूरी ताकत : अर्थशास्त्री

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

अर्थशास्त्रियों ने अमेरिकी टैरिफ को आर्थिक ब्लैकमेल की संज्ञा दी है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा है कि ये टैरिफ भारत को आत्मसंतुष्टि और निर्भरता से मुक्त होने के लिए एक थेरेपी के तौर पर भी काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर उद्योग, नीति निर्माता और राजनयिक मिलकर काम करें, तो आज का टैरिफ आतंक कल बदलाव का कारण बन सकता है। इन्फोमेरिक्स रेटिंग्स के मुख्य अर्थशास्त्री मनोरंजन शर्मा ने कहा, आगे का काम मुश्किल है, लेकिन ईमानदारी और ठोस प्रयासों से हम इस चुनौती का सामना कर सकते हैं। सिर्फ जरूरत है पूरी रफ्तार से आगे बढ़ने और पूरी ताक से काम करने की। फिलहाल, दुनिया एक बड़े दांव वाले नाटक को देख रही है। क्या भारत झुकेगा, टूटेगा या फिर वापसी करेगा!शुल्क लगाए जाने के बीच सरकार ने वस्त्र निर्यात को बढ़ावा देने के लिए 50 देशों में विशेष संपर्क कार्यक्रम चलाने की योजना बनाई है।

इस पहल के तहत ब्रिटेन, जापान, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्पेन, नीदरलैंड, पोलैंड, कनाडा, मेक्सिको, रूस, बेल्जियम, तुर्किये, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ऑस्ट्रेलिया जैसे प्रमुख देशों को शामिल किया गया है। भारत पहले से ही 220 से अधिक देशों को वस्त्र निर्यात करता है, लेकिन ये 50 देश मिलकर करीब 590 अरब डॉलर का वैश्विक वस्त्र एवं परिधान आयात करते हैं। इस आयात में भारत की हिस्सेदारी फिलहाल महज पांच-छह प्रतिशत है। एक अधिकारी ने कहा, मौजूदा परिदृश्य में इन देशों के साथ विशेष संपर्क की यह पहल बाजार विविधीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होने जा रही है। इसमें भारतीय मिशन और निर्यात प्रोत्साहन परिषदों (ईपीसी) की अहम भूमिका होगी।

परिधान निर्यात संवर्धन परिषद (एईपीसी) के महासचिव मिथिलेश्वर ठाकुर ने कहा, 25 प्रतिशत शुल्क दर को तो उद्योग ने पहले ही स्वीकार कर लिया था, लेकिन अब अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क लगने से भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बांग्लादेश, वियतनाम, श्रीलंका, कंबोडिया और इंडोनेशिया जैसे देशों की तुलना में 30-31 प्रतिशत तक घट गई है। इससे भारतीय वस्त्र उद्योग अमेरिकी बाजार से लगभग बाहर हो गया है।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में रिहायशी घरों में लगी भीषण आग, हादसे में आठ लोग घायल

जम्मू। जम्मू के किश्तवाड़ में रिहायशी घरों में आग लगने की घटना सामने आई है। इस हादसे में कई लोगों के घायल होने की खबर सामने आई है। घायलों को किश्तवाड़ के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।चिकित्सा अधीक्षक युद्धवीर सिंह ने बताया कि आग की घटना में आठ घायलों को किश्तवाड़ के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। इनमें से चार गंभीर रूप से घायल हैं और उन्हें डोडा के सरकारी मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। वहीं, किश्तवाड़ की विधायक शगुन परिहार ने कहा, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना है कि किश्तवाड़ में लगभग छह घरों में आग लग गई। लगभग सात लोग घायल हुए हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आग पर अब काबू पा लिया गया है।

मुंबई में आंदोलन शुरू करने पर अड़े जरांगे, सरकार ने बातचीत के लिए भेजा प्रतिनिधिमंडल

छत्रपति संभाजीनगर। मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे बुधवार को मुंबई के लिए रवाना हो गए। वह 29 अगस्त से मुंबई में अपना आंदोलन शुरू करने पर अड़े हुए हैं। इसे देखते हुए सरकार ने एक प्रतिनिधिमंडल को उनसे मुलाकात करने के लिए भेजा है। जालना जिले में अपने पैतृक गांव अंतरवाली सराटी में जरांगे ने मीडिया से कहा कि उनके समर्थक शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन करेंगे। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करेंगे कि गणेश उत्सव के दौरान किसी को कोई असुविधा न हो।जालना पुलिस ने 40 शर्तें लगाने के बाद जरांगे और उनके समर्थकों को मार्च जारी रखने की अनुमति दे दी। इन शर्तों में उन्हें कानून-व्यवस्था से संबंधित किसी भी स्थिति से बचने, वाहनों की आवाजाही में बाधा उत्पन्न न करने और आपत्तिजनक नारे न लगाने का निर्देश दिया गया है। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और सत्तारूढ़ भाजपा ने जरांगे से मंगलवार को अनुरोध किया था कि वह 27 अगस्त से शुरू हो रहे गणेश उत्सव के दौरान मुंबई में प्रदर्शन करने की अपनी योजना पर फिर से विचार करें।

गूगल मैप ने ली जान! मैप ने कार सवारों को दिखाया गलत रास्ता, वैन नदी में बही, 3 लोगों की मौत

जयपुर, 28 अगस्त [एजेंसी]।

राजस्थान के चित्तौडग़ढ़ में एक वैन को गूगल मैप पर रास्ता देखना भारी पड़ गया। मैप के सहारे यात्रा कर रही वैन तीन साल से बंद पुलिया पर जा पहुंची। पुलिया पार करने के दौरान वैन पुलिया पर मौजूद गड्ढे में फंस गई और बहाव तेज होने की वजह से नदी बह गई। इस वैन में सवार नौ लोगों में से चार लोग नदी में बह गए। तीन लोगों की मौत हो गई और एक बच्चा लापता हो गया। पुलिस ने बताया कि वैन के चालक ने कथित रूप से 'गूगल मैप' की मदद से यह रास्ता चुना था। वह वैन को उस पुलिया की ओर ले गया जिसे कुछ महीनों से बंद कर दिया गया था। वैन ने उसे पार करने की कोशिश की तो वह तेज बहाव में बह गई।पुलिस के मुताबिक, वैन में एक ही परिवार के लोग थे। बनास नदी के तेज बहाव में वैन काफी दूर तक बह गई, जिससे चार लोग डूब गए जबकि पांच लोगों ने वैन की छत पर बैठकर

जान बचाई। यह हादसा मंगलवार देर रात लगभग 1.30 बजे हुआ। पुलिस के मुताबिक वैन में सवार परिवार भीलवाड़ा जिले में एक धार्मिक स्थल के दर्शन कर घर लौट रहा था। पुलिस ने बताया कि वैन चालक ने रास्ता खोजने के लिए 'गूगल मैप' का इस्तेमाल किया, जो उन्हें बनास नदी पर बने एक ऐसे पुल की ओर ले गया जो लंबे समय से बंद था। चित्तौड़गढ़ के पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी ने बताया कि बनास नदी में उफान के कारण नदी पार करने वाले सभी रास्ते बंद थे लेकिन यह परिवार ऐसे ही एक बंद पुल को लांघकर सोमी-उपरेड़ा पुलिया पर चला गया, जो कुछ महीनों से बंद थी। उन्होंने बताया कि जैसे ही चालक ने नदी पार करने की कोशिश की कार पुल पर फंस गई और नदी के तेज बहाव में बहने लगी। अधिकारी ने बताया, वैन में सवार लोग खिड़की तोड़कर उसकी छत पर चढ़ गए और उनमें से एक ने अपने रिश्तेदार को फोन किया, जिसने घटना की सूचना पुलिस को दी। उन्होंने बताया कि थाना प्रभारी रश्मि देवेंद्र सिंह तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और एक नाव का इंतजाम किया। अधिकारी ने बताया कि अंधेरे में परिवार तक पहुंचना मुश्किल था लेकिन पुलिसकर्मियों और स्थानीय लोगों ने बेहतरीन काम किया और किसी तरह कार तक पहुंच गए।पुलिस अधीक्षक ने बताया कि परिवार के सदस्य अपने मोबाइल टॉर्च से बचाव दल को इशारा करते रहे। हालांकि, जब तक पुलिसकर्मी फंसे परिवार तक पहुंचे दो महिलाएं और दो बच्चे बह चुके थे।

इमरान खान ने आसिम मुनीर को सत्ता का भूखा बताया बोले- पाकिस्तान में कर दी हैं उत्पीड़न की सारी हदें पार

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सेना प्रमुख आसिम मुनीर को सत्ता का भूखा बताते हुए देश में तानाशाही चलाने का आरोप लगाया।उन्होंने कहा कि मुनीर न तो नैतिकता समझते हैं और न ही इस्लाम। मुझसे काफी की उम्मीद के बजाय मुनीर को मुझसे माफी मांगनी चाहिए। मुनीर ने ही नौ मई की योजना बनाई थी और उसी ने सीसीटीवी फुटेज चुराई थी। आज, नौ मई असीम मुनीर की बीमा पॉलिसी है। क्रिकेटर से राजनेता बने 72 वर्षीय खान अगस्त 2023 से जेल में हैं। खान ने कहा कि देश में कोई हाइब्रिड व्यवस्था नहीं है। जो चल रहा है वह आसिम मुनीर की तानाशाही है, इसीलिए ट्रंप ने शहबाज शरीफ की बजाय मुनीर को आमंत्रित किया। उन्होंने मुनीर पर फासीवाद और उत्पीड़न की सारी हदें पार करने का आरोप लगाया। खान ने कहा कि उनके दो भांजे सहित अन्य रिश्तेदारों का अपहरण कर लिया गया, जबकि उनका राजनीति से कोई संबंध नहीं है।

फिनलैंड के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री मोदी से की बात, भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते पर दोहराया समर्थन

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फोन कर पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते को शीघ्र पूरा करने के लिए अपने देश के समर्थन को दोहराया। प्रधानमंत्री कार्यालय के एक बयान में कहा गया है कि दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की भी समीक्षा की और क्वांटम प्रौद्योगिकियों, 6जी, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, साइबर सुरक्षा और स्थिरता सहित उभरते क्षेत्रों में साझेदारी बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।स्टब ने 2026 में भारत द्वारा आयोजित होने वाले एआइ इम्पैक्ट शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए समर्थन की पुष्टि की।बयान में कहा गया है कि स्टब ने यूक्रेन में संघर्ष के समाधान पर वाशिंगटन में यूरोप, अमेरिका और यूक्रेन के नेताओं के बीच हाल ही में हुई बैठकों पर मोदी के साथ अपना आकलन साझा किया। पीएम मोदी ने संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान और शांति एवं स्थिरता की शीघ्र बहाली के लिए भारत के निरंतर समर्थन को दोहराया।

प्रयागराज में छात्र की खौफनाक तरीके से हत्या अलग-अलग जगहों से मिले हाथ-पैर और सिर

प्रयागराज। प्रयागराज का करेली इलाका बुधवार को खौफनाक मंजर से दहल उठा, जिसकी कल्पना भी इंसानियत को शर्मसार कर दे। स्कूल के लिए निकले 17 वर्षीय छात्र पीयूष सिंह उर्फ यश की चाकू और आरी से टुकड़े-टुकड़े कर हत्या कर दी गई और अलग-अलग स्थानों पर अंगों को ठिकाने लगाया गया।पहले मंगलवार को औद्योगिक क्षेत्र के नाले में धड़ मिला था। दूसरे दिन सैदपुर कछार में सिर और पैर मिला, जबकि हाथ जंगली जानवरों का निवाला बन चुके थे, एक पैर की तलाश जारी है। पुलिस का कहना है कि छात्र पीयूष की निर्मम हत्या करने वाला करीबी रिश्तेदार ही है। उसने पारिवारिक कलह के चलते सनसनीखेज ढंग से वारदात को अंजाम दिया।पुलिस एक व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। इन सब से अनजान मां के आंसू और अपने लाल की आने की उम्मीद हर किसी के दिल को झकझोर देती है।करेली निवासी पीयूष सिंह सरस्वती विद्या मंदिर शास्त्री नगर में 11वीं का छात्र था। उसके पिता अजय सिंह का निधन हो चुका है। मंगलवार सुबह करीब साढ़े आठ बजे वह स्कूल जाने के लिए घर से निकला था।दोपहर ढाई बजे तक जब वह घर नहीं आया तो मां कामिनी देवी परेशान हो गईं। जब वह स्कूल पहुंचीं तो पता चला कि पीयूष आया ही नहीं था। यह सुनकर मां घबरा गईं और खोजबीन शुरू कर दी। कहीं पता नहीं चला तो करेली थाने पहुंचकर बेटे के गायब होने का मुकदमा दर्ज कराया।इसके बाद उसी दिन एक युवक का सिर, हाथ और पैर कटा हुआ धड़ मिलने से सनसनी फैल गई थी। गांव की एक महिला ने स्कूटी से शव को फेंकने आए युवक को देखकर टोका था, जिसके बाद वह भाग निकला।

एमपी-एमएलए कोर्ट ने सभी आठ आरोपियों को किया बरी

अदालत के फैसले के बाद क्या बोले नीरज के भाई ?

धनबाद, 28 अगस्त [एजेंसी]।

बुधवार को शाम 5.30 बजे के समय था। जोरदार बारिश हो रही थी। सरायढेला के कृष्णा नगर में भी जोरदार बारिश हो रही थी। सभी घरों के दरवाजे बंद थे। पीसीसी पथ पर पानी की जोरदार धाराए बह रही थीं और एक गली के अंदर अशोक यादव के मकान का दरवाजा बंद था। दरवाजा खटखटाने पर एक महिला बाहर आती है। पूछने पर बताया कि स्व. अशोक यादव का परिवार उपर के तल पर रहता था। थोड़ी देर बाद उपर जाने पर सीढ़ी पर ही अशोक यादव के छोटे पुत्र से मुलाकात होती है। यह बताने पर की अखबार से आए हैं तो उन्होंने कहा कि वे अभी कुछ नहीं कहना चाहते। नाम पूछने पर भी कहा कि अभी छोड़ दीजिए।कुछ आगे बात बढ़ाने पर उन्होंने बस इतना कहा कि परिवार के लोगों से बात कर आगे अपील करने पर निर्णय लिया जाएगा। अशोक यादव की पत्नी से मिलने की बात पर बेटे ने कहा कि रहने दीजिए। न्यायालय से फैसला आने के बाद कोर्ट से बाहर निकलने पर नीरज सिंह के भाई अभिषेक सिंह ने कहा कि वे उच्च न्यायालय में अपील करेंगे। उम्मीद के अनुरूप फैसला नहीं आया है। हालांकि इसके बाद वे कुछ भी नहीं बोले। अपनी गाड़ी में बैठे और रवाना हो गए। लोयाबाद: एमपी-एमएलए के विशेष न्यायालय ने नीरज सिंह हत्याकांड मामले में आठ आरोपितों को बरी कर दिया है। इस हत्याकांड में नीरज सिंह के साथ उनके चालक घोल्टू महतो की मौत हुई थी। लोयाबाद मदनाडीह में घोलटू महतो का परिवार निवाश करता है। पत्नी मीना देवी इस फैसले से काफी निराश हैं।

मोदी ने क्यों नहीं उठाया ट्रंप का फोन, टैरिफ के बाद अमेरिका से आ रही कॉल पर कॉल

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से पीएम नरेन्द्र मोदी से टेलीफोन पर बात करने की कोशिश हुई थी। इस बारे में व्हाईट हाउस की तरफ से प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) को अप्रोच किया गया था। लेकिन बीच में अड़चन भरोसे की कमी ने पैदा कर दी। असलियत में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पीएम मोदी से वार्ता को लेकर राष्ट्रपति ट्रंप की तरफ से लगातार गलत तथ्य पेश करने से भारत के नीतिकार स्तब्ध होने के साथ ही सतर्क भी हैं। इस बात का भरोसा नहीं है कि दो शीर्ष नेताओं के बीच बातचीत हो तो उसे अमेरिका की तरफ से आगे किस तरह से पेश किया जाए। लिहाजा ट्रंप की तरफ से वार्ता की पेशकश पर पीएमओ ने उत्साह नहीं दिखाया। जर्मनी के एक समाचार पत्र ने फ्रैंकफुर्टर अलगेमाइने ने एक दिन पहले यह समाचार प्रकाशित किया है जिसमें दावा किया गया है कि हाल के हफ्तों में राष्ट्रपति ट्रंप की तरफ से चार बार पीएम मोदी से बात करने की कोशिश की गई लेकिन भारतीय पक्ष की तरफ से कोई जवाब नहीं दिया गया।

इस दावे का भारत की ओर से अभी तक आधिकारिक रूप से खंडन नहीं किया गया है।इस बारे में बेहद गोपनीय सूत्रों ने बताया कि, दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के बीच टेलीफोन पर वार्ता की जो प्रक्रिया होती है उसके पहले चरण में एक पक्ष की तरफ से आग्रह आता है और फिर दूसरे नेता के समय आदि को देख कर तिथि या समय आदि तय किया जाता है। राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यालय से संदेश प्राप्त हुआ था लेकिन कई वजहों से उसे यथोचित रूप नहीं दिया जा सका। इस बात का पता नहीं चल सका है कि ट्रंप के कार्यालय ने कितनी बार पीएमओ को अप्रोच किया था।

सूत्रों ने बताया कि संभवतः आपसी भरोसा नहीं होने की वजह से संवाद स्थापित नहीं हो सका। भारतीय नीतिकारों को इस बात का भरोसा नहीं था कि एक बार टेलीफोन वार्ता होने को बाद में किस तरह से अमेरिकी पक्ष इसे पेश करेगा। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिकी मध्यस्थता को लेकर राष्ट्रपति ट्रंप के दावे को बताया गया है।

भारत के विदेश मंत्रालय ने कई बार यह स्पष्ट किया है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पीएम मोदी की राष्ट्रपति ट्रंप से कोई बात हुई थी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने लोकसभा (28 जुलाई) व राज्य सभा (30 जुलाई) को बताया था कि ऑपरेशन सिंदूर के बारे में पीएम मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप के बीच कोई सीधी बात नहीं हुई थी। बाद में उन्होंने न्यूजवीक को दिए गए एक साक्षात्कार में बताया था कि नौ मई, 2025 (ऑपरेशन सिंदूर के दौरान) उपराष्ट्रपति जे डी वांस की पीएम मोदी से बात हुई थी लेकिन इसमें सीजफायर या कारोबारी मुद्दों पर कोई बात नहीं हुई थी। इसके बावजूद राष्ट्रपति ट्रंप कम से कम 40 बार इस बात का दावा कर चुके हैं कि उन्होंने भारत व पाकिस्तान के नेतृत्व पर कारोबार नहीं करने का दबाव बना कर सीजफायर के लिए राजी किया।

क्या कोयलांचल की धरती अब जानलेवा बन गई है , धमाके के साथ फटी जमीन, समा गई महिला

धनबाद (केंदुआ)। वो बुधवार की सुबह थी, जब गोधर मोड़ पर रहने वाले सोनू सिंह के घर के बाहर सबकुछ सामान्य था। अचानक एक तेज धमाका हुआ और जमीन ने अपना एक हिस्सा खोल दिया। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता घर की सदस्य अंजू देवी, जो कपड़े सुखाने बाहर निकली थीं, उसमें गिर गईं। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि गोधर मोड़ के निकट धनबाद-बोकारो मार्ग के समीप रहने वाले सोनू सिंह के घर के दरवाजे पर बुधवार की सुबह अचानक तेज आवाज के साथ गोफ बन गया। उस समय वहां सोनू की बहन थी, जो उसमें समा गई। यह देख कोहराम मच गया।स्वजन का शोरगुल सुन आसपास के लोग दौड़े। सभी ने मशक्कत के बाद अंजू देवी को गोफ से बाहर निकाल कर उनकी जान बचाई। सूचना पाकर विधायक राज सिन्हा मौके पर पहुंचे। पीड़ित परिवार को सुरक्षित स्थान पर बसाने के लिए बीसीसीएल के अधिकारियों से बातचीत की।इस घटना से स्थानीय लोगों में भय है। दरअसल, अंजू देवी रक्षाबंधन पर अपने मायके आईं थीं। कपड़े सुखाने के लिए घर से बाहर निकलीं थीं, तभी अचानक गोफ बन गया।वह संभल भी नहीं सकीं, उसकी चपेट में आ गईं। तभी उनके घर दूध देने के लिए मनोज यादव पहुंचे थे। उन्होंने शोर मचाया व जानकारी सोनू सिंह के पिता देवराज सिंह को दी।सोनू के भांजे साहिल सिंह ने तुरंत बांस और सीढ़ी की व्यवस्था। आसपास के लोग तब तक आ गए थे। सभी ने उनको सीढ़ी के सहारे बाहर निकाला।

सोनू के भाई मनोज ने बताया कि उनका घर रैयती जमीन पर है।अंजू देवी का कहना है कि अचानक गोफ में गिरने पर उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। वे अंदर ही बैठ गईं। गोफ के अंदर गैस नहीं थी, इसलिए जान बच गई। अधिकारियों ने कराई गोफ की घेराबंदी कुसुंडा एरिया के अधिकारी और केंदुआडीह थाने की पुलिस मौके पर पहुंची।बीसीसीएल अधिकारियों ने घटना की जानकारी ली, गोफ की घेराबंदी करा दी। पीड़ित परिवार को सुरक्षित स्थान पर बसाने की उन्होंने बात कही गई है।भाजपा नेता राजेश गुप्ता और विजय हलवाई ने बताया कि सोनू सिंह के घर के पास पुराना हवा चानक और बालू बैंकर था। बाद में बैंकर बंद हो गया, लेकिन इसकी ठीक से भराई नहीं होने के कारण यह घटना घटी।यह कोई पहला मौका नहीं है, जब झरिया के कोयलांचल में जमीन धंसने की ऐसी घटना हुई हो।

रक्षा, साइबर सुरक्षा पर दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर का होगा कार्यक्रम, इन क्षेत्रों पर भी होगी बातचीत

नईदिल्ली, 28 अगस्त [एजेंसी]।

क्वांटम मशीन लर्निंग में स्वदेशी नवाचार को बढ़ावा देने, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रक्षा प्रौद्योगिकी ढांचे को मजबूत करने के लिए अगले महीने दिल्ली में एक राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। प्रादेशिक सेना परिवर्तन का दशक अभियान के तहत आईआइटी-मद्रास, भारतीय सेना अनुसंधान प्रकोष्ठ और साइबरपीस के सहयोग से इंडियन आर्मी टेरियर साइबर क्वेस्ट 2025 का आयोजन कर रही है। इसमें रक्षा और साइबर सुरक्षा खतरों से निपटने पर विचार किया जाएगा। साइबर क्वेस्ट आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल), क्वांटम कंप्यूटिंग और ड्रोन तकनीक जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नवाचार और सहयोग को बढ़ावा देगा। इस प्रतियोगिता में एआई और एमएल का उपयोग करके भारत के लिए मजबूत प्रणालियां बनाने की दो प्रमुख चुनौतियां शामिल हैं। यह प्रतिभागियों को राष्ट्रीय सुरक्षा में सीधे योगदान करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि भारतीय सेना की वेबसाइट पर इसका विज्ञापन जारी किया गया है। इस पहल का उद्देश्य आधुनिक रक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रतिभाशाली लोगों को एकजुट करना है।इसका मकसद क्वांटम मशीन लर्निंग में स्वदेशी नवाचार को बढ़ावा देना, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना और समाधान तैयार करना है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा प्रौद्योगिकी ढांचे को मजबूत कर सके।

बातचीत के दरवाजे खुले हैं..., S Tariff पर ट्रंप के अधिकारी ने भारत को दिया खुला ऑफर

नई दिल्ली। भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते को लेकर बातचीत के दरवाजे खुले हुए हैं। दोनों पक्ष इस दिशा में सक्रियता से काम कर रहे हैं। सरकारी सूत्रों के अनुसार, अमेरिकी सरकार द्वारा भारतीय उत्पादों पर लगाया गया 50 प्रतिशत शुल्क एक अस्थायी चरण है, क्योंकि दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक संबंध हैं।

इसे सुलझाने के लिए सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं। हालांकि वाणिज्य मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि इस व्यापार समझौते में किसानों, मछुआरों और छोटे उद्यमियों के हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उधर पीटीआई के अनुसार, अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने भी बुधवार को भारत-अमेरिका संबंधों को बेहद जटिल तो बताया लेकिन साथ ही आशा व्यक्त की कि आखिरकार, जल्द ही हम एक साथ आएंगे। दोनों देशों के बीच समझौता हो जाएगा। सूत्रों के अनुसार, इस वित्तीय वर्ष के पहले चार महीनों में अमेरिका को भारत के निर्यात में 21.64 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो 33.53 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। रुझान के अनुसार, निर्यात पिछले वर्ष के आंकड़े (86.5 अरब डॉलर) को छू सकता है। वाणिज्य मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, अमेरिकी टैरिफ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की समस्या है और इसे लेकर सभी काम कर रहे हैं। मंत्रालय का मानना है कि 27 अगस्त से अमेरिका में भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क लगने के बावजूद पिछले वित्त वर्ष 2024-25 की तरह ही हमारा निर्यात रहेगा। सूत्रों के अनुसार, निर्यातकों के लिए चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि इन उच्च टैरिफ का प्रभाव उतना गंभीर नहीं होगा जितना कि आशंका जताई जा रही है खासकर भारतीय निर्यातों की विविधता को देखते हुए। पिछले वित्त वर्ष में भारत ने अमेरिका को 86 अरब डॉलर का निर्यात किया था।चालू वित्त वर्ष 2025-26 में अप्रैल से जुलाई के बीच भारत ने अमेरिका में 33.53 अरब डॉलर का निर्यात किया है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार घरेलू निर्यातकों को अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव से बचाने के लिए उपायों पर काम कर रही है। वाणिज्य मंत्रालय इस सप्ताह रासायनिक, रत्न और आभूषण जैसे क्षेत्रों से संबंधित हितधारकों के साथ निर्यात को नए बाजारों में बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए बैठकें आयोजित कर रहा है। 2025-26 के बजट में घोषित निर्यात संवर्धन मिशन के गठन पर भी तेजी से काम चल रहा है। उधर, भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लागू होने के कुछ समय बाद ही एक साक्षात्कार के दौरान अमेरिकी अमेरिकी वित्त मंत्री बेंसेट ने भारत-अमेरिका संबंधों को बेहद जटिल बताते हुए उम्मीद जताई है कि आखिरकार, हम एक साथ आ जाएंगे।

त्वचा पर कोजिक एसिड इस्तेमाल करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान, होगा फायदा

त्वचा की देखभाल के लिए विभिन्न प्रकार के उत्पाद इस्तेमाल किए जाते हैं, जो उसे स्वस्थ बनाए रखने में योगदान देते हैं। इन उत्पादों में कोजिक एसिड का नाम भी शामिल होता है, जिसकी ज्यादा चर्चा नहीं की जाती। यह कई प्रकार के कवकों से प्राकृतिक रूप से प्राप्त यौगिक होता है। इसका उपयोग करने से त्वचा में निखार आता है और रंजकता से छुटकारा मिलता है। हालांकि, कोजिक एसिड लगाने से पहले आपको इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

कोजिक एसिड से पहले जरूर लगाएं सनस्क्रीन

कोजिक एसिड एक ऐसा पदार्थ है, जो मेलेनिन को कम करने में सक्षम होता है। यह त्वचा की रंगत के लिए जिम्मेदार यौगिक होता है, जिसके कम होने पर त्वचा में निखार आ जाता है। हालांकि, मेलेनिन घटने पर त्वचा संवेदनशील भी हो जाती है और सूरज की किरणें उसे ज्यादा नुकसान पहुंचा सकती हैं। इसीलिए, कोजिक एसिड लगाने से पहले आपको सनस्क्रीन जरूर इस्तेमाल करनी चाहिए। एक अच्छी गुणवत्ता वाली और 50 स्कोर वाली सनस्क्रीन लगाएं।

पहले कर लें पैच टेस्ट

कोजिक एसिड एक तरह का सक्रिय घटक होता है, जो हर किसी के लिए सुविधाजनक नहीं होता। कुछ लोगों को इसके इस्तेमाल से जलन हो सकती है या उनकी त्वचा लाल पड़ सकती है। खास तौर से संवेदनशील त्वचा वाले लोगों को ये परेशानियां होने का ज्यादा खतरा रहता है। इनसे बचने के लिए पहले पैच टेस्ट करके देख लें। हाथ पर थोड़ा-सा कोजिक एसिड लगाएं और कुछ घंटे इंतजार करके देखें कि उसका क्या असर होता है।

कम मात्रा से करें शुरुआत

कोजिक एसिड एक शक्तिशाली उत्पाद होता है, जिसे शुरुआत में ज्यादा नहीं लगाना चाहिए। आपको इसे धीरे-धीरे त्वचा की देखभाल का हिस्सा बनाना चाहिए और त्वचा को इससे परिचित होने का समय देना चाहिए। शुरुआत में इसे कम उपयोग करने से आपकी त्वचा को सहनशीलता विकसित करने में मदद मिलेगी और जलन का खतरा कम होगा। पहले इसे हफ्ते में केवल 2 बार लगाएं और धीरे-धीरे करके मात्रा बढ़ा दें।

ये अन्य उत्पादों का उपयोग करने से बचें-कई लोग कोजिक एसिड को अन्य सक्रीय घटकों के साथ इस्तेमाल करने की गलती कर बैठते हैं। ऐसा करने से त्वचा की सुरक्षात्मक परत को नुकसान पहुंचता है और जलन का खतरा बढ़ता है। आपको कोजिक एसिड के साथ रेटिनोइड्स और ग्लाइकोलिक एसिड जैसे अन्य शक्तिशाली उत्पाद लगाने से बचना चाहिए। इसके साथ सौम्य उत्पादों का ही प्रयोग करें। जब तक किसी पेशेवर द्वारा न सुझाया जाए तब तक एक साथ कई कठोर सक्रिय उत्पादों का उपयोग करने से बचें।

मॉइस्चराइजर का जरूर करें इस्तेमाल

कोजिक एसिड का इस्तेमाल करने के बाद ज्यादातर लोगों की त्वचा शुष्क हो जाती है और फटने लगती है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि आप इसे लगाने के तुरंत बाद मॉइस्चराइजर इस्तेमाल कर लें। एक अच्छा मॉइस्चराइजर आपकी त्वचा को हाइड्रेटेड रखने में मदद करेगा और संभावित जलन को भी कम करेगा। साथ ही इससे त्वचा के फटने की संभावना कम हो जाएगी और नमी बनाए रखने में मदद मिल सकेगी।

अक्षय कुमार की फिल्म हैवान में श्रिया पिलगांवकर की एंट्री, सामने आई ये दिलचस्प जानकारी

अक्षय कुमार और सैफ अली खान ने लगभग 17 साल बाद एक रोमांचक थ्रिलर फिल्म के लिए हाथ मिलाया है, जिसके निर्देशन की कमान भूल भुलैया और हेरा फेरी के निर्देशक प्रियदर्शन को सौंपी गई है। इस फिल्म का नाम है हैवान। फिल्म की शूटिंग कोच्चि में शुरू हो चुकी है। अब हैवान में श्रिया पिलगांवकर की एंट्री हो चुकी है। वह फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती नजर आएंगी। आइए जानें क्या जानकारी मिली है। रिपोर्ट के अनुसार, हैवान की स्टार कास्ट में अब श्रिया शामिल हो चुकी हैं। वह जल्द ही अपने हिस्से की शूटिंग शुरू करने वाली हैं। श्रिया इस फिल्म को लेकर काफी उत्साहित हैं। यह पहला मौका है, जब श्रिया, अक्षय और सैफ के साथ काम कर रही हैं। तीनों की तिकड़ी देखने के लिए दर्शक बेताब हैं। फिल्म हैवान अगले साल सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख सामने नहीं आई है। हैवान साल 2016 की आई मलयालम थ्रिलर फिल्म ओप्पम की रीमेक है, जिसमें मोहनलाल ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में अक्षय और सैफ के बीच जबरदस्त भिड़ंत देखने को मिलेगी। अक्षय और सैफ ने हिंदी सिनेमा को कई हिट फिल्में दी हैं, जिनमें कल्ट क्लासिक मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी (1994), ये दिल्लगी (1994), तू चोर मैं सिपाही (1996) और कींमत (1998) शामिल हैं। दोनों को आखिरी बार साल 2008 में आई फिल्म टशन में साथ देखा गया था।

अच्छी नींद के लिए अपनाएं ये आदतें, होगा फायदा

फिल्म 120 बहादुर की हीरोइन बनीं राशि खन्ना पहली बार फरहान अख्तर के साथ जमेगी जोड़ी

पिछले काफी समय से अभिनेता, निर्देशक और निर्माता फरहान अख्तर फिल्म 120 बहादुर को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म से जुड़ी अब तक कई जानकारियां सामने आ चुकी हैं इसके जरिए फरहान पर्दे पर धमाकेदार वापसी करने वाले हैं और अब खबर है कि इसमें अभिनेत्री राशि खन्ना को कास्ट कर लिया गया है। ये पहला मौका होगा, जब वह किसी फिल्म में फरहान के साथ नजर आएंगी। आइए जानें फिल्म से जुड़ीं क्या कुछ जानकारियां सामने आई हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, राशि को ये फिल्म पिछली फिल्मों में उनकी शानदार अदाकारी के बलबूते मिली है। पिछली बार विक्रांत मैसी अभिनीत द साबरमती रिपोर्ट में उन्होंने दिल जीत लिए थे। इससे पहले आई फिल्म योद्धा में भी राशि ने कमाल का काम किया था। निर्माताओं को पूरा यकीन है कि राशि एक देशभक्ति और दिल छू लेने वाली इस फिल्म की कहानी और अपने किरदार के साथ पूरा न्याय करेंगी। राशि इस कहानी में और गहराई लेकर आएंगी। राशि इस फिल्म में फरहान की जोड़ीदार बनी हैं और वह इससे जुड़कर बेहद उत्साहित हैं, लेकिन उनकी भूमिका को लेकर कोई जानकारी बाहर नहीं आई है। पिछले दिनों सुनने में आया था कि रेजांग ला की लड़ाई पर आधारित इस फिल्म में अपनी भूमिका की तैयारी के लिए फरहान ने खुद को पूरी तरह झोंक दिया है। इसमें वह देश के लिए बलिदान देने वाले मेजर शैतान सिंह की भूमिका में नजर आएंगे। 120 बहादुर उस बहादुरी की कहानी दिखाएगी, जब 120 भारतीय जवानों ने हजारों दुश्मनों का सामना करते हुए लद्दाख की रक्षा की थी। इस फिल्म की शूटिंग 14,000 फीट की ऊंचाई पर हुई, जहां तापमान अक्सर माइनस 5 से माइनस 10 डिग्री तक पहुंच जाता था। फरहान ने कहानी को जीवंत करने के लिए शारीरिक और मानसिक हर स्तर पर मेहनत की है।

अच्छी नींद से न केवल दिनभर की ताजगी मिलती है, बल्कि इससे मानसिक और शारीरिक सेहत भी बेहतर होती है। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में सही समय पर सोना और जागना बहुत जरूरी हो गया है। इस लेख में हम आपको कुछ आसान और असरदार सुझाव देंगे, जिनसे आप रात को सोने से पहले कुछ आदतें बना सकते हैं और अच्छी नींद पा सकते हैं। इन आदतों को अपनाकर आप जीवन को और भी बेहतर बना सकते हैं।

नियमित समय पर सोने जाएं

रात को सोने का एक तय समय निर्धारित करें और उसे रोजाना फॉलो करें। इससे आपकी शरीर की आंतरिक घड़ी सेट हो जाएगी और आपको जल्दी नींद आने लगेगी। उदाहरण के लिए अगर आप रात 10 बजे सोने जाते हैं तो उसी समय पर बिस्तर पर जाएं और मोबाइल या टीवी देखने से बचें। इस आदत से आपका शरीर नियमित रूप से आराम करेगा और सुबह ताजगी महसूस होगी।

स्क्रीन टाइम कम करें

सोने से पहले मोबाइल, लैपटॉप या टीवी का उपयोग करना आपकी नींद को प्रभावित कर सकता है। इन उपकरणों की नीली रोशनी आपके दिमाग को जगाए रखती है, जिससे आपको नींद नहीं आती। कोशिश करें कि सोने से कम से कम एक घंटे पहले इन सभी उपकरणों का उपयोग न करें। इसके बजाय किताब पढ़ें या हल्का संगीत सुनें, जिससे आपकी आंखें आराम करें और नींद आने में मदद मिलेगी।

हल्का खाना खाएं

रात को सोने से पहले भारी खाना खाने से पाचन क्रिया पर बुरा असर पड़ सकता है, जिससे नींद में खलल पड़ता है। इसलिए रात का खाना हल्का और पौष्टिक होना चाहिए जैसे कि सलाद, दही या सूप आदि। इससे आपका पाचन तंत्र सही रहेगा और आपको अच्छी नींद मिलेगी। इसके अलावा सोने से पहले एक गिलास गर्म दूध पीना भी फायदेमंद हो सकता है, जिससे आपकी मांसपेशियां आराम करेंगी और नींद अच्छी आएगी।

ध्यान लगाएं या मेडिटेशन करें

सोने से पहले ध्यान लगाना या मेडिटेशन करना आपके मन को शांत करता है और तनाव कम करता है। यह प्रक्रिया आपकी मानसिक स्थिति को बेहतर बनाती है, जिससे नींद जल्दी आती है। आप चाहें तो हल्की स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज भी कर सकते हैं, जिससे मांसपेशियां आराम करेंगी। इसके अलावा आप सोने से पहले कुछ गहरी सांस लेने की तकनीक भी अपना सकते हैं, जिससे आपका मन शांत रहेगा और नींद अच्छी आएगी।

आरामदायक माहौल बनाएं

आपका सोने का कमरा साफ-सुथरा होना चाहिए और उसमें अंधेरा होना जरूरी है ताकि बाहरी शोर या रोशनी आपको परेशान न करें। कमरे का तापमान भी सही होना चाहिए, न ज्यादा गर्म न ही ज्यादा ठंडा। इसके अलावा बिस्तर का गद्दा और तकिया आरामदायक होना चाहिए ताकि आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो। इस तरह से इन सरल तरीकों को अपनाकर आप आसानी से अच्छी नींद पा सकते हैं और अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं।

बॉक्स ऑफिस पर वॉर 2 की कमाई की रफ्तार धीमी

ऋतिक रोशन, कियारा आडवाणी और जूनियर एनटीआर जैसे दिग्गज सितारों की अदाकारी से सजी फिल्म वॉर 2 को 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। इस फिल्म की शुरुआत जोरदार रही थी, लेकिन अब फिल्म की रफ्तार धीमी पड़ती जा रही है। दूसरे रविवार को भी फिल्म के कारोबार में कोई खास उछाल देखने को नहीं मिला। अब वॉर 2 की कमाई के 12वें दिन के आंकड़े सामने आ गए हैं, जिसमें गिरावट दर्ज की गई। बॉक्स ऑफिस का लेखा-जोखा रखने वाली वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, वॉर 2 ने रिलीज के 12वें दिन 2.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया। इसी के साथ इस फिल्म ने अब तक भारत में 224.25 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। 400 करोड़ रुपये की लागत में बनी फिल्म वॉर 2 ने दुनियाभर में 340 करोड़ रुपये से अधिक कमाए हैं। बता दें, बॉक्स ऑफिस पर वॉर 2 का सामना रजनीकांत की कुली और एनिमेटेड फिल्म महावतार नरसिम्हा से हो रहा है।

वॉर 2 के निर्देशन की कमान अयान मुखर्जी ने संभाली है, जिन्हें वेक अप सिड, ये जवानी है दीवानी और ब्रह्मास्त्र- भाग वन शिवा जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। यशराज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की इस छठी फिल्म का निर्माण आदित्य चोपड़ा ने किया है। इस फिल्म के जरिए एनटीआर ने बॉलीवुड में कदम रखा है। बता दें कि सिनेमाघरों में कमाई करने के बाद फिल्म वॉर 2 का प्रीमियर ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर होने वाला है।

नुसरत भरुचा की फिल्म की रिलीज डेट आई सामने

बॉलीवुड अभिनेत्री नुसरत भरुचा इन दिनों अपनी अगली फिल्म 'उफ्फ ये सियापा' को लेकर सुर्खियों में हैं। कॉमेडी और ड्रामा से भरपूर इस फिल्म की रिलीज डेट सामने आ गई है। इस फिल्म से लंबे समय बाद नुसरत कॉमेडी अंदाज में बड़े पर्दे पर नजर आने वाली हैं। फिल्म का निर्देशन जी अशोक ने किया है, जो 'पिछा जमींदार', 'भागमती' और 'सुकुमारुडु' जैसी फिल्मों के लिए पहचाने जाते हैं। निर्माता लव रंजन और अंकुर गर्ग ने इस फिल्म को प्रोड्यूस किया है। लव रंजन और नुसरत भरुचा की जोड़ी पहले भी कई हिट फिल्मों में दर्शकों का मनोरंजन कर चुकी है, ऐसे में इस बार भी दर्शकों को उम्मीदें काफी बढ़ गई हैं। नुसरत भरुचा ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम पर फिल्म का पोस्टर साझा किया। पोस्टर पर लिखा है - प्यार में भोली...गुस्से में बंदूक की गोली। इसके साथ उन्होंने फिल्म की रिलीज डेट बताते हुए कैप्शन में सियापा स्क्वॉड का जिक्र किया। पोस्टर आते ही सोशल मीडिया पर हलचल मच गई और फैन्स ने इसे लेकर अलग-अलग तरह के रिएक्शन दिए।

शब्द सामर्थ्य -152

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. भारत के वर्तमान वित्तमंत्री 6. हित, उपकार 7. असमान, पूर्वोत्तर का एक राज्य 8. किसी वस्तु व्यक्ति आदि के पहचान सूचक संबोधन का शब्द, संज्ञा 10. शवस्थल पर बनाया गया मकान, योग का अंतिम अंग, तपस्या 13. इंकार करना, ना कहना 14. पिता, क्लर्क, सम्मानीय व्यक्ति 15. आय पर लगने वाला टैक्स, इंकमटैक्स 16. प्रतिद्वंद्वी, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी 17. परंपरा, रीति, रिवाज 20. रूप से युक्त, चिह्न, लक्षण, नाटक, एक साहित्यिक अलंकार 23. लोग, प्रजा 25. नामी, नामवर, प्रसिद्ध 27. संसार का स्वामी, बादशाह, सम्राट, ईश्वर 28. फैलाना, खिंचाव पैदा करना।

ऊपर से नीचे

1. मारना, प्रहार करना, आघात करना 2. मिथ्याअभिमान, आडंबर 3. विपत्ति, आफत 4. मालदार, धनवान, अमीर 5. ज्ञान प्राप्त करना, अनुमान लगाना, कल्पना करना 7. हक 9. विवश, लाचार 11. मानकंद, नापने का पैमाना 12. अपमानित और तिरस्कृत 17. संतान उत्पन्न करने की क्रिया, जन्म देने की क्रिया 18. लंबे कपड़े का गट्ठा, पशुओं को रखने की जगह 19. जलयान, वायुयान, जलपोत 21. आश्रय, सहारा 22. थोड़ा, जरा, तनिक 24. जुर्म, गुनाह 26. बाघ की तरह का धारीदार हिंसक एवं विशाल पशु।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 151 का हल

भू	कं	प		फा	य	दा			स
प		ल	ला	ट		य	ती		म
ति	ल	क		क	न	क			झ
	क्ष्म				रे				
ग	ण	क		सं	श	य			सी
ह		या	च	क		म	न्न		त
रा	क्ष	स		र	क्ष	क			न
	त्रि				मि				
शा	य	री		का	त	र			गो

रवि तेजा और श्रीलीला की मास जथारा की रिलीज स्थगित; निर्माताओं ने बताई वजह

रवि तेजा और श्रीलीला की फिल्म मास जथारा के लिए फैंस को और इंतजार करना होगा। यह फिल्म पहले 27 अगस्त को रिलीज होने वाली थी। लेकिन अब किन्हीं कारणों की वजह से फिल्म की रिलीज डेट टाल दी गई है, जिसकी वजह निर्माताओं ने पोस्ट के जरिए साझा की है।फिल्म मास जथारा की रिलीज जो 27 अगस्त को होने वाली थी, उद्योग-व्यापी हड़ताल और कुछ तकनीकी देरी के कारण टाल दी गई है। निर्माताओं ने बताया कि नई रिलीज तारीख जल्द घोषित की जाएगी। सीथारा एंटरटेनमेंट्स ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, हड़ताल और सामग्री पूरी करने में देरी के कारण मास जथारा 27 अगस्त को रिलीज नहीं हो पाएगी। लेकिन हम जल्द ही आपके लिए यह फिल्म सिनेमाघरों में लाने के लिए काम कर रहे हैं।फिल्म के प्रशंसक, जो गणेश चतुर्थी पर इसके रिलीज होने का इंतजार कर रहे थे, इस खबर से निराश हो चुके हैं। अभिनेता नवीन चंद्रा ने हाल ही में बताया था कि फिल्म की डबिंग शुरू हो चुकी है और यह एक दमदार और जमीन से जुड़ी कहानी होगी। एक्शन-ड्रामा फिल्म मास जथारा का निर्देशन भानु बोगावरपु ने किया है। इस फिल्म में रवि तेजा और श्रीलीला मुख्य भूमिकाओं में हैं। सिनेमैटोग्राफी विधु अयन्ना और संपादन नवीन नूली ने किया है। फिल्म निर्माण सीथारा एंटरटेनमेंट्स और फॉर्च्यून फोर सिनेमाज ने मिलकर किया है।

नगर निगम में कचरा प्रबंधन हेतु 6.26 करोड़ की परियोजना मंजूर

चिरमिरी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के मार्गदर्शन तथा उपमुख्यमंत्री अरुण साव के प्रयासों से स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0 के तहत चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र को बड़ी सौगात मिली है। राज्य स्तरीय तकनीकी समिति (SLTC) की 8वीं बैठक में चिरमिरी नगर पालिक निगम क्षेत्र में सूखे और गीले कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए आधुनिक संयंत्र स्थापित करने तथा संयंत्रों के उन्नयन एवं विकास की योजना को मंजूरी दी गई है। इस परियोजना पर कुल 6 करोड़ 26 लाख 27 हजार रुपए खर्च किए जाएंगे।

स्वीकृत परियोजना के तहत सूखे कचरे के लिए उन्नयन एवं विकास हेतु 12 एमआरएफ प्लांट तथा गीले कचरे हेतु 12 नवीन विंड्रो कंपोस्ट प्लांट की स्थापना की जाएगी। संयंत्र निर्माण, उपकरण लागत और अतिरिक्त कार्यों को मिलाकर परियोजना की कुल लागत 4 करोड़ 51 लाख रुपए होगी, जबकि पांच साल के संचालन व संधारण पर 1 करोड़ 75 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने इस बड़ी पहल के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और उपमुख्यमंत्री अरुण साव का क्षेत्र की जनता की तरफ से आभार व्यक्त किया है। गौरतलब है कि इस परियोजना के जरिए चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र में कचरा निस्तारण और रीसाइक्लिंग को नई दिशा मिलेगी। इससे शहर को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाने में मदद मिलेगी।

सूरजपुर जिले से 151 श्रद्धालु हुए शामिल

सूरजपुर। धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने और श्रद्धालुओं को भगवान श्रीराम के दर्शन का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से श्री रामलला दर्शन योजना के अंतर्गत सरगुजा संभाग से कुल 850 हितग्राही अयोध्या के लिए रवाना हुए। इनमें सूरजपुर जिले से 151 श्रद्धालु शामिल हैं। इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, समाज कल्याण विभाग तथा अन्य जनप्रतिनिधियों ने हरी झंडी दिखाकर श्रद्धालुओं को रवाना किया गया और उन्हें शुभकामनाएं दी गईं। प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु विशेष निगरानी दल भी गठित किया गया है, जो यात्रा के दौरान आवश्यक सहयोग प्रदान करेगा। श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल देखा गया।

गणेश चतुर्थी पर 2.41 करोड़ की लागत से कार्यो से हुआ भूमि पूजन, 16 माह में होगा निर्माण

कोरिया बैकुंठपुर। कोरिया जिले में लंबे इंतजार के बाद आज नवीन पुलिस अधीक्षक कार्यालय के निर्माण की शुरुआत हो गई। ओड़गी नाका स्थित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समीप बनने वाले इस भवन का भूमि पूजन गणेश चतुर्थी के अवसर पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बैकुंठपुर विधायक भईयालाल राजवाड़े एवं विशिष्ट अतिथि कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी रहीं।

विधायक श्री राजवाड़े ने कहा कि पिछले 27 वर्षों के संघर्ष का परिणाम आज जिले को मिला है, यह रजत जयंती वर्ष का एक बड़ा तोहफा है। उन्होंने निर्माण एजेंसी को गुणवत्ता एवं समय सीमा का पालन करते हुए 16 माह में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने इसे जिले के लिए प्राइम लोकेशन बताया और कहा कि नालंदा परिसर निर्माण भी शीघ्र प्रारंभ होगा। उन्होंने नगर पालिका की खाली भूमि पर अन्य विभागों के लिए भी भवन निर्माण कराने की बात कही। पुलिस अधीक्षक रवि कुर्रे ने कहा कि जिले के गठन के बाद से पुलिस अधीक्षक कार्यालय का अभाव था, जो अब पूरा हो रहा है। 2.41 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला यह आधुनिक कार्यालय पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों में सहूलियत देगा। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी, जिला वन मंडल अधिकारी चंद्रशेखर शंकर सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा, उपाध्यक्ष श्रीमती वंदना राजवाड़े, अपर कलेक्टर डी.डी. मांडवी, बैकुंठपुर एसडीएम उमेश पटेल, सहित गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन के अधिकारी- कर्मचारी उपस्थित थे।

मुक्तिधाम रास्ते पर ठेकेदार और प्रशासनिक अधिकारियों की मनमानी, नागरिकों में बढ़ रहा आक्रोश

अंतिम यात्रा में बाधा डालती कोयला परिवहन गाड़ियां

कोरिया चरचा कालरी। नगर पालिका शिवपुर चर्चा क्षेत्र में जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही और कोयला ठेकेदारों की मनमानी ने इंसानियत को शर्मसार कर दिया है। अत्यंत महत्वपूर्ण मुक्तिधाम जाने वाला जाने वाला मार्ग, जहाँ लोग अपने प्रियजनों की अंतिम यात्रा लेकर पहुँचते हैं, वहाँ अब कोयला ठेकेदार परिवहन ठेकेदार की मनमानी चलती है और बड़े-बड़े कोयला ट्रकों की कतारें लगी रहती हैं।राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित चर्चा थाने से मात्र 50 मीटर दूरी पर बना मुक्तिधाम जाने का रास्ता अब मानो ट्रक चालकों की पार्किंग में बदल चुका है। इस कारण शोकाकुल परिजनों को अपने स्वजनों की अंतिम यात्रा में बेहद अपमानजनक और पीड़ादायक स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि चंद पैसों झ्द्गलालच में मानवीय संवेदनाएँ कहीं दब-सी गई हैं। प्रशासन को कई बार अवगत कराने के बावजूद अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। दुख की घड़ी में मुक्तिधाम मार्ग में ट्रकों की दीवार बना कर रास्ता बाधित करना बेहद अमानवीय व बेहद शर्मनाक है।

नगर पालिका शिवपुर चर्चा के वार्ड क्रमांक एक स्थित सार्वजनिक मुक्तिधाम जाने हेतु विशेष रूप से बनाया गया मार्ग और पुलिया भी जर्जर अवस्था में है। इसका लगभग 150 मीटर का रास्ता केवल कोयला परिवहन ट्रकों के कब्जे में है। यह ट्रक चर्चा थाना के गेट से लगकर पूरे रास्ते में खड़ी रहती हैं इससे स्पष्ट है कि थाना प्रभारी तक की मौजूदगी में यह सब हो रहा है, जानबूझकर की जाने वाली इस गंभीर लापरवाही और मनमानी से स्पष्ट होता है कि प्रशासन की चुप्पी कहीं न कहीं मिलीभगत की ओर इशारा करती है। चर्चा थाना प्रभारी जो सुलझे और समझदार अधिकारी हैं उनका जानबूझकर चुप रहना अपने आप में सवालिया प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। गौरतलब है कि दो माह पूर्व चरचा प्रबंधन द्वारा कोयले का रोड सेल प्रारंभ किया गया जिसके तहत ठेका लेने वाले ठेकेदार,और परिवहनकर्ता ठेकेदार के द्वारा अपनी ट्रक टीपर आदि लगाकर कोयला ले जाना था इन ट्रकों को व्यवस्थित उचित स्थान पर खड़े करने की जिम्मेदारी चरचा कालरी प्रबंधन की है किंतु कॉलरी प्रबंधन को सिर्फ कोयला उत्पादन से मतलब है उसे मानवीय संवेदना से कोई भी लेना-देना नहीं है जो की बेहद शर्मनाक है पूरे संभाग में संभवत नगर पालिका शिवपुर चर्चा का मुक्तिधाम एकमात्र ऐसा मुक्तिधाम है जहां प्रशासनिक साठगांठ से ट्रक ठेकेदारों की मनमानी चल रही है आम जनता दुख की घड़ी में परेशान हो रही है जबकि संभाग के अन्य मुक्तिधामों को बेहद व्यवस्थित रखा गया है उन जगहों पर भी जिम्मेदार अधिकारी रहते हैं और सब कुछ व्यवस्थित रहता है। मुक्तिधाम जाने वाले मार्ग पर कोयला परिवहन करने वाली बड़ी-बड़ी गाड़ियों के खड़े रहने की वजह से अंतिम यात्रा में शामिल होने वाले लोगों को मजबूरन अपनी गाड़ियां हाईवे के किनारे खड़े करने को करनी पड़ती है क्योंकि उन्हें अंतिम संस्कार में जाना जरूरी रहता है हाईवे में गाड़ियों के खड़े रहने की वजह से दुर्घटना की संभावना रहती है ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार के दुर्घटना के लिए प्रशासन जिम्मेदार होगा। चर्चा बचाओ मंच के पदाधिकारियों ने इस स्थिति की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि -अंत्येष्टि जैसी पवित्र यात्रा में व्यवधान डालना, असंवेदनशीलता की पराकाष्ठा है। यदि ट्रकों को तत्काल नहीं हटाया गया, तो मंचआंदोलन के लिए बाध्य होगा। नगर पालिका अधिकारी शिवपुर चर्चा के द्वारा भी पूर्व में ट्रैकों को हटाने के लिए कई बार निर्देश दिया गया था बावजूद इसके कोई कार्रवाई नहीं की गई,स्थिति जस की तस बनी हुई है। वशिष्ठ कुमार ओझा मुख्य नगर पालिका अधिकारी शिवपुर चर्चा ने कहा कि कलेक्टर कोरिया, महाप्रबंधक बैकुंठपुर क्षेत्र व जिला पुलिस प्रशासन को पत्र भेजकर इस गंभीर विषय से अवगत कराया जाएगा। मुक्तिधाम जैसा संवेदनशील स्थल जहाँ लोग अपने परिजनों को अंतिम विदाई देने आते हैं, वहाँ कोयला ट्रकों की दीवार बनाना प्रशासन और ठेकेदार की असंवेदनशीलता का सबसे बड़ा उदाहरण है।दु:ख के क्षणों में शांति और सम्मान की बजाय परेशानी देना, वास्तव में समाज और शासन दोनों के लिए शर्मनाक है।

गणेश चतुर्थी और नुवाखाई की धूम

रायपुर। राजधानी में आज पर्युषण पर्व, नुवाखाई तथा गणेश चतुर्थी की धूम रही। आज कई व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे। वहीं गणेश चतुर्थी के अवसर पर विभिन्न मार्गों में गणेश प्रतिमाओं की भारी बिक्री हुई जिसके चलते यातायात प्रभावित हुआ। राजधानी में आज शुभ मुहुर्त पर घर घर तथा सार्वजनिक स्थलों पर गणेश की प्रतिमा बैठाने का क्रम जारी रहा। इस अवसर पर डीजे सहित अन्य बैंड पार्टियों के साथ लोगों ने गणेश की प्रतिमाएं घर ले गये। आज गणेश चतुर्थी के अलावा ओडिया समाज द्वारा नुवाखाई का पर्व मनाया गया।

करीलधोआ में पशु स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन

पशु स्वास्थ्य और प्रबंधन पर विशेष जोर, ग्रामीणों की रही भारी भागीदारी

कोरिया बैकुंठपुर। बुधवार के दिन कोरिया जिले के ग्राम करील धोआ में वाटरशेड प्रा. लि. एवं पशुधन विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में क्षेत्र के ग्रामीण किसान एवं पशुपालकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। शिविर के दौरान पशुओं का उपचार, डीवर्मीकारण, टीकाकरण तथा पशुओं में रोग नियंत्रण के लिए आवश्यक दवाओं का वितरण किया गया। साथ ही पशुओं में बांझपन की समस्या से छुटकारा दिलाने हेतु विशेष उपचार की व्यवस्था की गई।

पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी श्री पटेल ने किसानों एवं पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य प्रबंधन के महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पशुओं के संतुलित आहार, देखभाल और बीमारियों से बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त उन्होंने पशुओं के भोजन में शामिल किए जाने वाले हरे चारे की विभिन्न प्रजातियों जैसे नेपियर घास, बरसीम, मकई और अन्य पौष्टिक चारा प्रजातियों की पहचान और उपयोगिता के बारे में भी बताया। शिविर में बड़ी संख्या में किसान एवं पशुपालकों की उपस्थिति कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण रही।

ग्रामीणों ने शिविर से प्राप्त जानकारी को अत्यंत उपयोगी बताया और भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करने की मांग की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी सलका श्री पटेल, ड्रेसर सत्यनारायण तथा वाटरशेड प्रा. लि. से श्री आशीष सिंह, चंद्रभान गिरी और एस. मिंज ने सक्रिय भूमिका निभाई। संयुक्त प्रयास से आयोजित इस शिविर ने पशुपालकों को न केवल पशु उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई बल्कि वैज्ञानिक पद्धति से पशुपालन को और बेहतर बनाने का मार्ग भी दिखाया।

छत्तीसगढ़ में शर्मनाक घटना: भाइयों ने दृष्टिहीन बहन से किया दुष्कर्म

अंबिकापुर। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले से मानवता को झकझोर देने वाली घटना सामने आई है. यहाँ दो ममेरे भाइयों ने अपनी ही दृष्टिहीन नाबालिग बहन के साथ एक साल तक दुष्कर्म किया. इस घिनौनी करतूत का खुलासा तब हुआ जब नाबालिग को पेट में दर्द और उभार महसूस हुआ, जिसके बाद उसने रोते-बिलखते हुए अपने माता-पिता को पूरी आपबीती बताई.परिजनों ने तत्काल थाने में जाकर आरोपियों के खिलाफमामला दर्ज कराया. हालांकि, खबर है कि दोनों आरोपी पिछले ढाई महीने से फरार हैं. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश जारी है.

सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी पद के लिए चयन एवं प्रतिक्षा सूची जारी

सूरजपुर। डी.एम.एफ मद अंतर्गत सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी के पदों पर संविदा भर्ती हेतु मेरिट सूची अनुसार कुल 27 पात्र आवेदकों का दस्तावेज सत्यापन के लिए 25 अगस्त को प्रातः 11:00 बजे से आमंत्रित किया गया था। उक्त दस्तावेज सत्यापन में सूची अनुसार उपस्थित कुल 21 पात्र आवेदकों का दस्तावेज सत्यापन उपरांत मेरिट अनुसार चयन एवं प्रतिक्षा सूची तैयार किया गया हैं चयन एवं प्रतिक्षा सूची को भर्ती हेतु चयन समिति द्वारा अनुमोदन पश्चात जिले के एनआईसी की वेबसाइट स्ह्वह्रड्डद्भश्चह्वह्ग.द्दश1.द्बठ्ठ पर अपलोड किया गया है।

डिजिटल फसल सर्वेक्षण के लिए खेतों में उतरा राजस्व अमला

सूरजपुर। खरीफ वर्ष 2025-26 डिजिटल फसल सर्वेक्षण कार्य के लिए कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन के निर्देश के अनुपालन में राजस्व अमला खेतों में पहुंचकर,सतत रूप से सर्वेक्षण कार्य का निरीक्षण कर रहा है । कलेक्टर ने राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे सर्वेक्षण कार्य की सतत निगरानी करें और सुनिश्चित करें कि सभी प्रविष्टियाँ सही ढंग से दर्ज हों। प्रत्येक ग्राम में लगाए गए फसलों का डिजिटल सर्वेक्षण कार्य गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध तरीके से पूरा होना चाहिए। सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा दर्ज की गई जानकारी का सत्यापन राजस्व निरीक्षक द्वारा अनिवार्य रूप से किया जाए। निर्धारित तिथि तक सर्वेक्षण कार्य पूर्ण करना अनिवार्य है ताकि अधिक से अधिक किसानों को इसका लाभ मिल सके। किसानों को बार-बार दस्तावेज़ सत्यापन कराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। एक बार दर्ज की गई जानकारी से न केवल उनकी कृषि उपज का रिकॉर्ड तैयार होगा, बल्कि उन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपज बेचने में भी आसानी होगी। फसल से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियाँ एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगी, जिससे किसानों को योजनाओं और लाभों की जानकारी प्राप्त करने में सुविधा होगी। प्रशासन का मानना है कि यह पहल कृषि क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस निरीक्षण के दौरान नायब तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक, पटवारी और ग्रामवासी अपनी उपस्थित दर्ज करा रहे हैं।

उफनते नाले में कार बहने से 4 की मौत

जगदलपुर। बीती रात कांगेर घाटी में बाढ़ के दौरान उफनते नाले में मारूती सुजुकी कार के बह जाने के हादसे में कार में सवार एक ही परिवार के पति-पत्नी सहित दो बच्चों की जल समाधि बन गयी और पांचवे सवार चालक ने तैरकर अपनी जान बचा ली।

न्यायधानी बिलासपुर में मिलेगा एम्स स्तर का इलाज

रायपुर। छत्तीसगढ राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं को नई ऊँचाइयों पर ले जाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 25 अगस्त 2025 को कुमार साहब स्व. दिलीप सिंह जूदेव शासकीय सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, बिलासपुर और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान , रायपुर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस करार से प्रदेशवासियों को अब अपने ही शहर में अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ और उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हो सकेंगी। समारोह में एम्स रायपुर की ओर से कार्यकारी निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त), अधिष्ठाता (अनुसंधान) डॉ. अभिरुचि गल्होत्रा, सह-अधिष्ठाता (अनुसंधान) डॉ. एकता खंडेलवाल तथा अतिरिक्त प्राध्यापक डॉ. राकेश गुप्ता उपस्थित रहे। वहीं सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, बिलासपुर की ओर से चिकित्सा अधीक्षक डॉ. भानु प्रताप सिंह, प्रोफेसर डॉ. अर्चना सिंह और सह-प्रोफेसर डॉ. अभिषेक कुमार मौजूद थे। इस अवसर पर डॉ. भानु प्रताप सिंह ने कहा कि इस समझौता ज्ञापन से अस्पताल के चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफको एम्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से जोड़ा जाएगा। इसके अंतर्गत उन्हें समय-समय पर नवीनतम तकनीकों और उन्नत चिकित्सा पद्धतियों का प्रशिक्षण प्राप्त होगा। साथ ही शोध कार्यों और नई तकनीकों को लागू करने में भी सहयोग मिलेगा। इस साझेदारी का सीधा लाभ प्रदेश के आम नागरिकों को मिलेगा, क्योंकि उन्हें अपने ही शहर में उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध होंगी, डॉ. सिंह ने कहा।

उन्होंने आगे बताया कि बिलासपुर आयुक्त श्री सुनील जैन और कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने उन्हें प्रेरित किया कि वे एम्स रायपुर का भ्रमण कर वहाँ की कार्यप्रणाली को समझें और सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भी वैसी ही सुविधाओं का विकास करें।

एम्स रायपुर के कार्यकारी निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ले. जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) ने इस अवसर पर कहा कि एम्स हमेशा सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, बिलासपुर के चिकित्सकों, नर्सों और कर्मचारियों को नैदानिक प्रशिक्षण, संकाय आदान-प्रदान, सहयोगी शोध, टेलीमेडिसिन सेवाओं तथा बहु-केंद्रीय अध्ययनों में हर संभव सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ शासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार लगातार सार्वजनिक स्वास्थ्य मॉडल को मजबूत करने और एकीकृत प्रणाली को बढ़ावा देने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। एम्स रायपुर अपने अत्याधुनिक स्वास्थ्य सेवा तंत्र, उत्कृष्ट नैदानिक अभ्यास और उच्च गुणवत्ता वाले शोध कार्यों के लिए न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विख्यात है। यह करार प्रदेश की चिकित्सा प्रणाली को नई दिशा देने वाला साबित होगा।

पीएमश्री योजना अंतर्गत पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में 5 दिवसीय कार्यशाला का किया जायेगा आयोजन

सूरजपुर। राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा रायपुर के निर्देशानुसार पीएमश्री योजना अंतर्गत पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 06 से 08 तक अध्यापन कराने वाले शिक्षक, शिक्षिकाओं के क्षमता निर्माण कार्यशाला उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ मिलकर गणित, विज्ञान एवं टक्नोलॉजी में 04 सितंबर से 08 सितंबर तक 05 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है। जिसमें सूरजपुर जिले से 07 शिक्षक क्रमशः खूबचंद राजवाड़े (पीएमश्री सेजेस जयनगर), हिमांशु शर्मा (पीएमश्री सेजेस बतरा), लोमेश सिन्हा (पीएमश्री सेजेस रामानुजनगर), विशाखा पासी (पीएमश्री सेजेस प्रेमनगर), मुस्कान अग्रवाल (पीएमश्री सेजेस सूरजपुर), रविन्द्र कुमार भगत (पीएमश्री सेजेस ओड़गी) एवं विशाल शर्मा (पीएमश्री इ.एम.आर.एस शिवप्रसादनगर) का राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा द्वारा चयन किया गया है।

परिवहन विभाग द्वारा शिक्षार्थियों के लाइसेंस के लिए एक दिवसीय शिविर का किया गया आयोजन

सूरजपुर। छ.ग. स्थापना के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के निर्देश के अनुपालन में परिवहन विभाग द्वारा 29 अगस्त को रेवती रमण मिश्र महाविद्यालय सूरजपुर एवं शासकीय महाविद्यालय बिश्रामपुर में शिक्षार्थी लाइसेंस हेतु एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर स्थल पर ऑनलाइन आवेदन संबंधी प्रक्रिया शासन द्वारा विहित दर पर पूर्ण किये जाने हेतु शासन द्वारा अधिकृत लोक सुविधा केन्द्र/पीएसके स्टॉफतथा परिवहन कार्यालय के स्टाफ उपस्थित रहेंगे। उक्त लर्निंग लाइसेंस शिविर हेतु कुल 03 सेट कम्प्यूटर, 01 प्रिन्टर, आवश्यक कुर्सी-टेबल तथा इन्टरनेट सुविधायुक्त दो कमरे उपलब्ध कराया जायेगा ताकि शिविर का आयोजन सुनिश्चित हो सके।

छत्तीसगढ़ की संस्कृति और कला की पहचान है रायगढ़ का चक्रधर समारोह : मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि चक्रधर समारोह छत्तीसगढ़ की परंपरा, इतिहास और कलाओं की सुंदरता को अनुभव करने का अद्भुत अवसर है। रायगढ़ का चक्रधर समारोह छत्तीसगढ़ की संस्कृति और कला की पहचान है। उन्होंने कहा कि गणेशोत्सव की परंपरा से जुड़ा यह आयोजन आज भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की लय और माधुर्य से पूरी दुनिया को मंत्रमुग्ध करता है।

यह समारोह न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को गौरवान्वित करता है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर कला-प्रेमियों को हार्दिक आमंत्रण देते हुए कहा कि महाराजा चक्रधर सिंह जी की स्मृति में आयोजित यह समारोह छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक यात्रा को और समृद्ध करता है। रायगढ़ की पुण्यभूमि, हमारी सांस्कृतिक धरोहर और कलाओं से परिपूर्ण है। यह वही धरती है जहाँ महाराजा चक्रधर सिंह जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य को नई पहचान दी और रायगढ़ को कला की राजधानी बना दिया। उन्होंने समस्त कला-प्रेमियों को आमंत्रित करते हुए कहा कि वे इस आयोजन का हिस्सा बनें और भारतीय कला-संस्कृति के माधुर्य का अनुभव करें। मुख्यमंत्री श्री साय ने विश्वास व्यक्त किया कि चक्रधर समारोह की यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों को कला और संस्कृति से जोड़ने का कार्य करेगी और न केवल रायगढ़, बल्कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ बनाएगी।

किराना दुकान में चोरी करने वाले चोर पकड़ाये

दुर्ग। दुर्ग की थाना उतई पुलिस ने एक किराना दुकान में चोरी करने वाले चोरों को गिरफ्तार किया है तथा उसके पास से चोरी का सामान एवं नगद रकम बरामद किया है। दुर्ग पुलिस व्दारा रात्रि में दुकान का शटर तोड़कर सामान एवं नगद रकम को चोरी करने वाले आरोपियों पर अंकुश लगाकर चोरी/सेंधमारी के खिलाफमुहिम में ऑपरेशन विश्वास अभियान के तहत थाना उतई पुलिस द्वारा किराना दुकान से सामान एवं नगद रकम को चोरी करने वाले के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही किया गया।

चाकू दिखाकर आमलोगों को डरा रहा बदमाश पकड़ाया

दुर्ग। जिले की थाना सिटी कोतवाली पुलिस ने शिवनाथ नदी रोड जैन मंदिर रोड में आमजनो को धारदार चाकू दिखाकर डरा धमका रहे एक युवक को गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार दुर्ग पुलिस को दिनांक 25.08.2025 को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुआ कि रात्रि के समय शिवनाथ नदी रोड जैन मंदिर रोड के पास एक व्यक्ति धारदार चाकू लेकर आने-जाने वाले लोगो को डरा धमका रहा है।

मौके पर दुर्ग पुलिस द्वारा घेराबंदी कर आरोपी को पकड़ा जिससे नाम पता पूछने पर अपना नाम तामेश्वर उर्फ सोनू निवासी डिपरा पारा कुआ चौक दुर्ग का रहने वाला बताया जिसके कब्जे से एक धारदार चाकू को गवाहों के समक्ष जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया। आरोपी के विरूद्ध थाना सिटी कोतवाली दुर्ग में धारा 25 आर्म्स एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया। आरोपी को न्यायिक रिमाण्ड पर पेश किया गया।

चाकू लहराने वाला पकड़ाया

राजनांदगांव। जिले की थाना डोंगरगांव पुलिस ने बाजार चौक सार्वजनिक स्थान में चाकू लहरने वाले व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेजा है।

पत्नीहंता को दस वर्ष का कारावास

जगदलपुर। पत्नी की हत्या के आरोपी पति तुलाराम को जिला एवं सत्र न्यायाधीश गोविंद नारायण जांगडे ने दस साल की सजा सुनायी है, साथ ही अदालत ने दोषी पर 100 रुपये का अर्थदंड भी लगाया। अर्थदंड अदा न करने की स्थिति में उसे एक माह का अतिरिक्त सश्रम कारावास भुगतना होगा। अदालत ने धारा 302 के स्थान पर आरोपी को धारा 304 (भाग-2) भादवि के तहत दोषी मानते हुए दस वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। शासन की ओर से पैरवी कर रहे लोक अभियोजक ने बताया कि घटना बडांजी थाना क्षेत्र की है। आरोपी तुलाराम बघेल पिता-लुदरू बघेल, निवासी- ग्राम-घाटधनोरा बाजारपारा के विरुद्ध थाना-बडांजी जिला बस्तर में धारा 302 भारतीय दण्ड संहिता भादवि के तहत मामला पंजीबद्ध कर न्यायालय में मामला दाखिल किया गया था, घटना 29 अप्रैल 2023 की है। मृतिका पदमा बघेल आरोपी की पत्नी अपने रिश्तेदारों के यहां दो दिनों से शादी में गई थी वहां से अत्यधिक शराब के नशे में अपने घर आई और अपने पति तुलाराम से खाना नहीं बनाने की बात को लेकर विवाद करने लगी, जिससे नाराज होकर पास पड़े लकड़ी के मुसर एवं बांस की छड़ी से अपनी पत्नी को मारा था जिससे उसकी मृत्यु हो गई थी। सुनवाई के दौरान जिला एवं सत्र न्यायाधीश गोविंद नारायण जांगड़े ने पाया कि मृतका पदमा बघेल द्वारा अपने पति के लिए खाना बनाने से इंकार करने एवं अत्यधिक शराब के नशे में घर आने से आरोपी द्वारा तीव्र आवेश में विवाद की स्थिति में घटना अचानक हुई, इसलिए पूर्व नियोजित हत्या का आशय साबित नहीं हुआ।

स्टेरिंग कमेटी की बैठक कल

कोरबा। एसईसीएल में कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए एसईसीएल प्रबंधन लगातार गंभीर है। अधिकारी लगातार क्षेत्रों का दौरा भी कर रहे हैं। कल स्टेरिंग कमेटी की बैठक होगी, जिसमें उत्पादन बढ़ाने पर चर्चा किया जाएगा। इस बैठक में गोपाल नारायण सिंह, सुजीत सिंह, नाथूलाल पांडेय, अजय विश्वकर्मा सहित अन्य सदस्य सुझाव देंगे। कोयला कामगारों में और अधिक उत्साह बढ़ाने के लिए विचार विमर्श होगा। इधर ढेलवाडीह में भी एसईकेएमसी की आईआर बैठक कल रखी गई है। जिसमें आवासों के मुद्दे को उठाया जाएगा। खासकर पुराने आवास रहने लायक नहीं रह गए हैं। बैठक में अशोक सिंह, धनीराम साहू, उदेश्वर नायक, अजीत सिंह अपने-अपने सुझाव देते हुए और भी कई मुद्दों को उठाएंगे।

गिरौदपुरी जाएंगे बसपा कार्यकर्ता

कोरबा। बसपा की जोन स्तरीय बैठक गिरौदपुरी में आयोजित की गई है। 31 अगस्त को होने वाले इस बैठक में प्रदेश प्रभारी मनीष आनंद, दाऊराम रत्नाकर, प्रदेश अध्यक्ष श्याम टंडन शामिल होंगे। बैठक में सभी जिलाध्यक्षों को बुलाया गया है। कोरबा जिलाध्यक्ष फूलचंद सोनवानी सेक्टर में किए जा रहे कार्यों की जानकारी देंगे। बसपा के प्रदेश महामंत्री राधेश्याम सूर्यवंशी लगातार कटघोरा क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं। कल उनके द्वारा बाता, बिरदा व आदर्श नगर कालोनी में बैठक ली गई। कटघोरा विधानसभा क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने लगातार बैठक ली जा रही है। बैठक में डीआर जाटवर, एडी जांगड़े, राघवेंद्र मनहर, विवेक बाल्मिकी, जयकिशन निराला, महेंद्र निराला ने सुझाव दिए। यह जानकारी बाबूलाल टंडन ने दी है।

बीकेकेएमएस ने किया पौधारोपण

कोरबा। भारतीय कोयला खदान मजदूर संगठन के द्वारा 28 अगस्त को पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इनके द्वारा अलग-अलग स्थानों पर पौधरोपण किए गए। गेवरा व दीपका के कार्यकर्ताओं ने मिलकर प्रगति नगर में पौधारोपण किया। इस दौरान रामनारायण साहू, रमेश गुरुद्वान, मदन सिंह, प्रीतम राठौर, वीरेंद्र राठौर, बाबू सिंह, कुलदीप कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे। एसईसीएल कोरबा पूर्व के भगत सिंह कालोनी स्थित पूजा पंडाल में भी पौधारोपण किया गया। इस दौरान रंजय सिंह, बाबूलाल चंद्रा, शैलेंद्र सिंह, राजेंद्र यादव, दादूराम राठौर, उत्तम कुलदीप सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे। आज शाम को कुसमुंडा स्थित विकास नगर कालोनी में भी पौधारोपण किया जाएगा। इस दौरान टिकेश्वर राठौर, हिरेंद्र चंद्रा, अमिया मिश्रा, राहुल वर्मा सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे।

धर्मसेना ने कपड़े वितरित किए

कोरबा। धर्मसेना व गौसेवा समिति के कार्यकर्ताओं ने लेमरू के निकट भुरूमाटी गांव में जाकर आदिवासियों को कपड़े वितरित किए। इस दौरान जिला संयोजक साकेत शर्मा, महानगर अध्यक्ष प्रकाश शर्मा, ललित आलोक, शुभम शर्मा सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे। इनका कहना है कि धर्म सेना के कार्यकर्ता समय-समय पर गांव में जाकर आदिवासियों को सामान देते रहे हैं।

गेवरा प्रोजेक्ट में 54 कर्मियों की संडे, ओटी और पीएचडी सुविधा छीनी, नेता यथावत

कार्मिक विभाग के बजाय एचआर ने जारी किया आदेश

-नगर संवाददाता-

कोरबा। साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के गेवरा क्षेत्र अंतर्गत गेवरा प्रोजेक्ट में कामकाज के अपने नियम हैं और इस बारे में उपर के अधिकारियों को भी कोई लेना-देना नहीं। शायद इसीलिए नीचे के अधिकारी अपने हिसाब से काम कर रहे हैं। एक आदेश के अंतर्गत इस प्रोजेक्ट के अलग-अलग स्थान पर काम कर रहे 54 कर्मियों की वे सुविधाएं छीन ली गई है जो संडे, ओवरटाइम और पेड हॉलीडे से जुड़ी हुई हैं। लेकिन विडंबना यह है कि प्रबंधन ने यूनियनों के पदेन पदाधिकारियों यानि प्रभावी नेताओं पर कृपा दृष्टि बनाए रखी है। उन्हे यह सुविधा मिलती रहेगी।

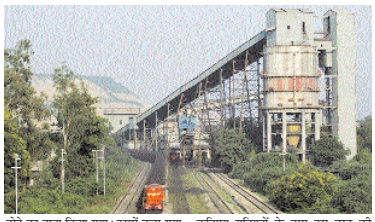

गेवरा क्षेत्र में नियम कायदों को लेकर पहले भी सवाल उठते रहे हैं और एक बार फिर नया मामला सामने आया है। खबर के अनुसार प्रबंधन ने यहां एक आदेश के अंतर्गत कुल 54 कर्मचारियों को संडे ड्यूटी के अलावा ओटी और पीएचडी अब अपात्र घोषित कर दिया है और इसे अमल में लेने की बात कही है। एसईसीएल गेवरा परियोजना के प्रबंधक द्वारा इस बारे में एक आदेश संख्या 8302025 जारी किया गया है जिसे सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदित होने का दावा किया गया। इसमें कहा गया कि मुख्यालय बिलासपुर के पत्र क्रमांक 152/16 अप्रैल 2015 के अनुपालन में यह व्यवस्था बनाई जा रही है। इसके अनुसार ऐसे कामगार जो अपना मूल जॉब छोड़कर लाइट जॉब या वैकल्पिक जॉब कर रहे हैं उन्हें उपरोक्त अतिरिक्त लाभ वाली ड्यूटी नहीं दी जाएगी। इनमें वेस्ट एमटीके के अलग-अलग श्रेणी के 15 कर्मचारी शामिल हैं। वर्कशॉप एमटीके के 17 कर्मचारी इस व्यवस्था से प्रभावित किए गए हैं, जबकि ईस्ट एमटीके से 8 कर्मचारी उपरोक्त आर्थिक फायदे वाली सुविधाओं से अगले समय तक के लिए वंचित किए गए हैं। जबकि साइलो एमटीके के 14 कर्मचारियों के नाम इस सूची में शामिल किया गया है। जानकार सूत्रों ने दावा किया कि अपने लोगों को बचाने के लिए कतिपय यूनियनों के द्वारा इस तरह की व्यवस्था के लिए काम कराया गया है ताकि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। कहा जा रहा है कि अभी भी बहुत सारे ऐसे कर्मी हैं जिन्हें बड़े नेताओं ने हल्के स्तर का जॉब उपलब्ध करा दिया है ताकि उन्हें काम करने में आसानी हो और वे अतिरिक्त सुविधाएं भलीभांति प्राप्त करते रहे। वहीं बदली व्यवस्था के बावजूद सुविधाओं की कटौती के मामले में ट्रेड यूनियन की नेतागिरी करने वाले पदेन प्रतिनिधियों या उनके खास शागीर्दों को बक्श दिया गया है, यानि वे पहले की तरह अभी भी सुविधा का लाभ लेने के मामले में अग्रणी रहेंगे।

सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि सामान्य तौर पर जब कभी कर्मचारियों के सेक्शन बदले जाते हैं या कामकाज को लेकर किसी प्रकार के परिवर्तन होते हैं तो ऐसे आदेश कार्मिक विभाग जारी करता है। लेकिन विशेष कारणों से इस आदेश को डिप्टी जीएम के रूचि से जारी कराया गया है।

इन श्रेणियों के कर्मी प्रभावित

सूची का अवलोकन करने से मालूम चलता है कि प्रभावित कर्मचारियों में डोजर ऑपरेटर, सॉवेल ऑपरेटर, केबलमेन, असिस्टेंट फोरमेन, ड्राइवर, ईपी इलेक्ट्रिशियन, डंपर ऑपरेटर, ड्रील ऑपरेटर, पे लोडर, क्रेन ऑपरेटर, लॉरी क्लीनर, फीडर ब्रेकर ऑपरेटर, मेकेनिकल फीटर, अस्सिटेंट लोडिंग ऑपरेटर, एसपीडीटी, मेकेनिकल फीटर हेल्पर, कन्वेयर ऑपरेटर और जनरल मजदूर जैसी श्रेणी वाले कर्मी को शामिल किया गया है।

कुछ यूनियनों ने किया आपत्ति

खबरों के अनुसार गेवरा परियोजना में बड़ी संख्या में कर्मचारियों के आर्थिक हितों पर कुठाराघात करने वाली इस व्यवस्था को लेकर विरोध के स्वर बुलंद हो रहे हैं। जानकारी मिली है कि कोयला उत्पादन और बेहतर कार्य संस्कृति पर भरोसा रखने वाली कुछ यूनियनों ने इस मामले में आपत्ति जताई है। उनके द्वारा इस बारे में हेड क्वाटर के साथ-साथ कोयला मंत्रालय से लेकर कोल इंडिया तक शिकायत करने की मानसिकता बनाई जा रही है।

सरमा-सुखरीताल मार्ग बदहाल

गंतव्य को पहुंचना है तो चलना ही होगा दलदल भरी राह में

कोरबा। पोड़ी उपरोड़ा ब्लॉक के सरमा ग्राम पंचायत के अंतर्गत सरमा से सुखरीताल को जोड़ने वाली पीडब्ल्यूडी सड़क की स्थिति जर्जर हो गई है। ग्रामीणों ने बताया कि यह मार्ग करीब 15 पंचायतों को जोड़ता है। वर्तमान में बारिश के कारण लोगों का आवागमन मुश्किल हो गया है।

क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के माध्यम से विभाग को कई बार अवगत कराया गया कि सड़क का सुधार कराया जाए, लेकिन न तो निर्माण हो रहा है और न ही मरम्मत की दिशा में कोई कदम उठाया गया। मामला कलेक्टर तक भी पहुंच चुका है, फिर भी अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। सड़क की बदहाली को देखते हुए सरपंच ने पंचायत की मूलभूत राशि से डस्ट डलवाना शुरू किया है। ग्रामीणों ने बताया कि प्रशासन ने वैसे भी पंचायतों की मूलभूत राशि कम कर दी है। ऐसे में इस राशि का उपयोग पीडब्ल्यूडी मार्ग पर करना पंचायत के विकास कार्यों को प्रभावित कर सकता है। ग्रामीणों ने कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि यदि जल्द ही पीडब्ल्यूडी विभाग सड़क सुधार की दिशा में कदम नहीं उठाता है, तो आने वाले दिनों में वे प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होंगे।

हाईवे और अन्य मार्गों पर इस वर्ष हादसों में 265 की मौत, यह आंकड़ा दो वर्षों के मुकाबले कम

सड़क हादसों की परिस्थितियां और कारण जानने के साथ पुलिस कर रही जागरूक

कोरबा। सड़कों को प्रगति का वाहक कहा गया है जो व्यक्तियों और सामाग्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान लाने ले जाने का सबसे सशक्त माध्यम बनी हुई है। डब्ल्यूबीएम से लेकर स्टेट और एनएच के अलावा अब भारत माला जैसी परियोजनाएं कोरबा जिले में कार्यशील हैं। सड़कों की स्थिति और विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर गाड़ियों की स्पीड बढ़ती है और प्रभावित होती है। इस चक्कर में हादसे भी होते हैं। वर्ष 2025 में अब तक हुए हादसों में जिले में 265 लोग काल कवलित हो गए। हालांकि यह संख्या बीते दो वर्षों के मुकाबले कम है।

ट्रैफिक पुलिस के द्वारा कोरबा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 1 जनवरी 2025 से लेकर 25 अगस्त की स्थिति में हुए सड़क हादसों का तुलनात्मक डाटा तैयार किया गया है। इसके अनुसार हाईवे से लेकर अन्य सड़कों पर दोपहिया और दूसरे वाहन की टक्कर सहित अन्यान्य कारणों से हुए हादसों में लोगों की या तो मौके पर मौत हो गई या तो वे कई दिन तक अस्पताल में संघर्ष करने के बाद जिंदगी को अलविदा कह गए। बताया गया कि वर्ष 2025 के अगस्त माह तक 265 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं हैं। जबकि वर्ष 2023 में जहां 340 लोग सड़क हादसों में घायल हुए थे, वहीं वर्ष 2024 में यह संख्या घटकर 402 रही। इस तरह मौजूदा आंकड़ा वर्ष 2023 की तुलना में 75 और 2024 की तुलना में 137 कम है। इसे बड़ी गिरावट के रूप में लिया जा रहा है। पुलिस ने कहा कि जिले में सड़क दुर्घटनाओं के मामलों में लगातार कमी दर्ज की जा रही है।

अधिकारियों का कहना है कि सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान, यातायात नियमों का सख्ती से पालन और हेलमेट व सीटबेल्ट को लेकर चलाए जा रहे विशेष अभियानों के चलते यह गिरावट आई है। दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में रिफ्लेक्टर और साइन बोर्ड लगाए गए हैं तथा तेज रफ्तार वाहनों पर कार्रवाई की जा रही है। जिला प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे यातायात नियमों का पालन करें और शराब पीकर वाहन न चलाएं। साथ ही सड़क पर वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग न करने और निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने की सलाह दी गई है। प्रशासन ने लक्ष्य रखा है कि आने वाले वर्षों में सड़क दुर्घटनाओं में और कमी लाई जाएगी।

6 वाहन चालकों पर कार्रवाई

कोरबा जिले की बालको नगर पुलिस ने 6 वाहन चालकों के खिलाफ धारा 185 मोटर व्हीकल एक्ट के अंतर्गत अपराध पंजीबद्ध करने के साथ इनके प्रकरण को कोर्ट भेजा है। बताया गया कि यह चालक शराब के नशे में गाड़ी चलाते मिले। पुलिस ने अपने अभियान के अंतर्गत आवागमन कर रहे चालको का परीक्षण एल्कोमीटर से किया। इस दौरान संबंधित 6 चालक के शरीर में निर्धारित स्टैंडर्ड से ज्यादा अल्कोहल की उपस्थिति पाई गई। इसे ड्रंकन ड्राइव का मामला माना गया। पुलिस के नियम के अनुसार इस तरह की स्थिति दुर्घटना को न्योता देने के साथ कारित करने के लिए जिम्मेदार होती है।

मुरली गांव में अवैध शराब जब्त की पुलिस ने

कोरबा। हरदी बाजार पुलिस ने कच्ची शराब को खपाने की योजना पर ब्रेक लगा दिया। इस मामले में अक्षय सिंह श्याम को गिरफ्तार किया गया है। उसके विरुद्ध आबकारी एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई की गई है। थाना प्रभारी मृत्युंजय पांडेय ने बताया कि इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। सूचना प्राप्त हुई थी कि यहां पर कुछ लोगों के द्वारा कच्ची शराब तैयार करने के साथ उसे यहां वहां कंज्यूम करने का काम किया जा रहा है। इस वजह से ग्रामीण क्षेत्र का वातावरण खराब हो रहा है और पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं खड़ी हो रही है। स्थिति को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने अक्षय के ठिकाने पर रेड की और वहां से 22 लीटर कच्ची शराब जप्त कर ली। पुलिस ने बताया कि अवैध गतिविधियों पर निगरानी लगातार की जा रही है और इसके साथ संबंधितों पर एक्शन लिए जा रहे है।

फुलसर में हाथियों ने मचाया उत्पात

कोरबा। जिले के कटघोरा वनमंडल के केंदई रेंज में हाथियों का आतंक लगातार जारी है। यहां के कोरबी सर्किल के खुर्रूपारा में 33 तथा सखोदा में 9 हाथी विचरण कर रहे हैं जबकि 10 हाथियों ने अन्यत्र रूख कर लिया है।

कोरबी सर्किल में मौजूद हाथियों के दल ने बीती रात फुलसर गांव में पहुंचकर जमकर उत्पात मचाया। इस दौरान आधा दर्जन ग्रामीणों के खेतों में लगे धान की फसल को बुरी तरह रौंद दिया। जबकि एक दंतैल हाथी अलग होकर बस्ती होते हुए कोरबी बस स्टैंड के समीप पहुंच गया और उसके पीछे एसईसीएल द्वारा निर्माणाधीन बाउंड्रीवाल को निशाना बनाते हुए ध्वस्त कर दिया। जिससे कंपनी को आर्थिक नुकसान हुआ है। वहीं हाथियों को भगाते समय क्षेत्र में विनोद नामक एक युवक गिरकर घायल हो गया। बताया जाता है कि वन विभाग के अधिकारी हाथियों की निगरानी में जुटे हुए हैं पर विभाग के द्वारा हाथियों की आवाजाही के संबंध में क्षेत्रवासियों को मुनादी व लाउडस्पीकर से सूचना नहीं दी जा रही है जिससे ग्रामीण नाराजगी प्रकट कर रहे हैं। फसल नुकसानी का उचित मुआवजा देने की मांग भी की जा रही है लेकिन उन्हें पर्याप्त मुआवजा राशि नहीं दी जा रही है।

हाथी प्रभावित क्षेत्र में अधिकारियों का दौरा भी पिछले कई दिनों से नहीं हो रहा है, न ही हाथियों से बचाव के लिए विभाग की ओर से किसी प्रकार रोकथाम की जा रही है जिससे कभी भी जनहानि होने की आशंका बनी रहती है। विभाग के रवैये से ग्रामीणों में नाराजगी व निराशा है जो कभी भी विस्फोटक रूप ले सकता है।

कोरबा। पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने दीनदयाल मार्केट पावर हाउस रोड कोरबा स्थित पीली कोठी में बिलोरिया परिवार द्वारा आयोजित पितृ मोक्ष ज्ञान यज्ञ श्रीमद् भागवत कथा श्रवण कर कथा वाचक आचार्य मृदुलकृष्ण शास्त्री महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया। पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल सहित सैकड़ों श्रद्धालुजनों ने कथा श्रवण कर प्रसाद ग्रहण किया।

प्रथम पूज्य की उपासना में जुटे श्रद्धालु

कोरबा। भगवान गणपति का 11 दिवसीय उत्सव अपार उल्लास, श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जा रहा है। सैकड़ों स्थानों पर गणेश प्रतिमाएं चतुर्थी को स्थापित की गई। इसके साथ मन की पवित्रता के साथ उपासना का दौर शुरू हो गया। हर कहीं भगवान के नाम का जयघोष हो रहा है। महिलाओं और पुरुषों की भजन कीर्तन मंडलियां ऐसे स्थानों पर अपनी उपस्थित दर्ज करते हुए भक्ति में गोते लगा रही है। सुरक्षा के स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक प्रबंध किए गए हैं।

आतंक का पर्याय बने सांड को पकड़कर भेजा गोठान

कोरबा। शहर में लोगों पर एक के बाद एक लगातार हमला किए जाने की वजह से आतंक का पर्याय बने काले सांड को नगर निगम की काउकेचर टीम ने आज सुबह पकड़कर गोठान भेज दिया। इससे लोगों ने राहत की सांस ली है। सांड के आतंक की खबर मीडिया में प्रकाशित व वायरल होने के बाद आज सुबह नगर निगम के अधिकारी गंभीर हुए और काउकेचर टीम के साथ सांड को ढूंढने निकली। इस दौरान सांड के लोकेशन के संबंध में जानकारी लेने धनेश सिंह से लगातार संपर्क करते रहे। जब उन्होंने इस सांड को मोतीसागर पारा में कल रात देखे जाने की जानकारी दी तो काउकेचर टीम मोतीसागर पारा पहुंची और उक्त सांड को घेराबंदी करने के साथ पकड़कर गोठान भिजवा दिया। याद रहे सांड के आतंक तथा लोगों पर लगातार हमला किए जाने की पहली जानकारी अधिवक्ता धनेश सिंह ने निगम के अधिकारियों को देते हुए इसे पकड़ने की मांग की थी। उन्होंने बताया था कि सांड सप्तदेव मंदिर से लेकर पुराना बस स्टैंड तक घूम रहा है और कई लोगों पर हमला कर चुका है।

वाहन किए गए जब्त

कोरबा। कोतवाली पुलिस ने तीन सवारी, प्रेशर हॉर्न, मॉडिफाई साइलेंसर और ड्रंकन ड्राइव को लेकर अभियान शुरू किया है। कोतवाली प्रभारी एमबी पटेल ने बताया कि बुधवार को 11 गाड़ियों पर कार्रवाई की गई। जबकि आज 25 गाड़ियां अब तक निशाने पर आई है। इस अभियान को सतत रूप से चलाया जाएगा।

जय श्रीराम
प्लाट बेचना है
बुधवारी बायपास रोड में 85×300 का प्लाट तथा दादर कोरबा में 20 डिसमिल का प्लाट बिक्री हेतु उपलब्ध है।
संपर्क करें
62681-46606

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com